

वर्ष 2018 में वैश्विक संवृद्धि की गति धीमी हुई है और यह सभी क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न रही है। विनियामकीय सुधारों से बैंकों के तुलन-पत्रों को मजबूती मिली है लेकिन कुछेक अर्थव्यवस्थाओं में कुछ खास कारक बैंकों की लाभप्रदता और उनकी आस्तियों की गुणवत्ता पर बुरा असर डाल रहे हैं। पूंजी की स्थितियां अच्छी एवं न्यूनतम विनियामकीय अपेक्षा से अधिक हैं। उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं की वित्तीय स्थितियों में हाल के दिनों में अपनाए गए सख्ती के रुख, भू-राजनीतिक जोखिमों और वर्तमान में चल रहे व्यापारिक तनावों के कारण बैंकिंग परिदृश्य में जोखिम उत्पन्न हो सकता है।

1. परिचय

II.1 वर्ष 2016 के मध्य वैश्विक स्तर पर प्रारंभ हुई बहाली जिसने 2017 में और जोर पकड़ा था, की गति 2018 के दौरान अब तक थोड़ी मंद पड़ती दिखी है और वित्तीय स्थितियां सख्त होती गयी हैं, विशेष रूप से उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) में। यूएस डालर में आयी मजबूती, बढ़ते व्यापारिक संघर्षों, देश-विशिष्ट कारकों – विशेष रूप से अर्जेंटीना और तुर्की में – तथा चीन में मंदी के संकेतों के कारण वर्ष में अधिकाधिक समय इन अर्थव्यवस्थाओं में पूंजी का बहिर्वाह और मुद्रा का अवमूल्यन हुआ। दूसरी ओर, विकसित अर्थव्यवस्थाओं (ईई) के बाजारों में मौजूद अस्थिरता में कमी आयी और जोखिम उठाने की क्षमता अपेक्षाकृत अधिक रही।

II.2 इन समष्टि आर्थिक परिस्थितियों के बीच 2018 के दौरान अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग व्यवसाय की गति पर थोड़ा अंकुश लगने के चिह्न दिखायी दिए हैं जबकि पूरे 2017 वर्ष में इसमें तेजी देखी गयी थी। ईएमई में आई उल्लेखनीय मंदी के कारण बैंक ऋणों की वृद्धि में भी असमानता आ गयी और 2018 की पहली और दूसरी तिमाही के बीच समग्र सीमा-पार बैंक ऋण में 130 बिलियन डालर की कमी आई।

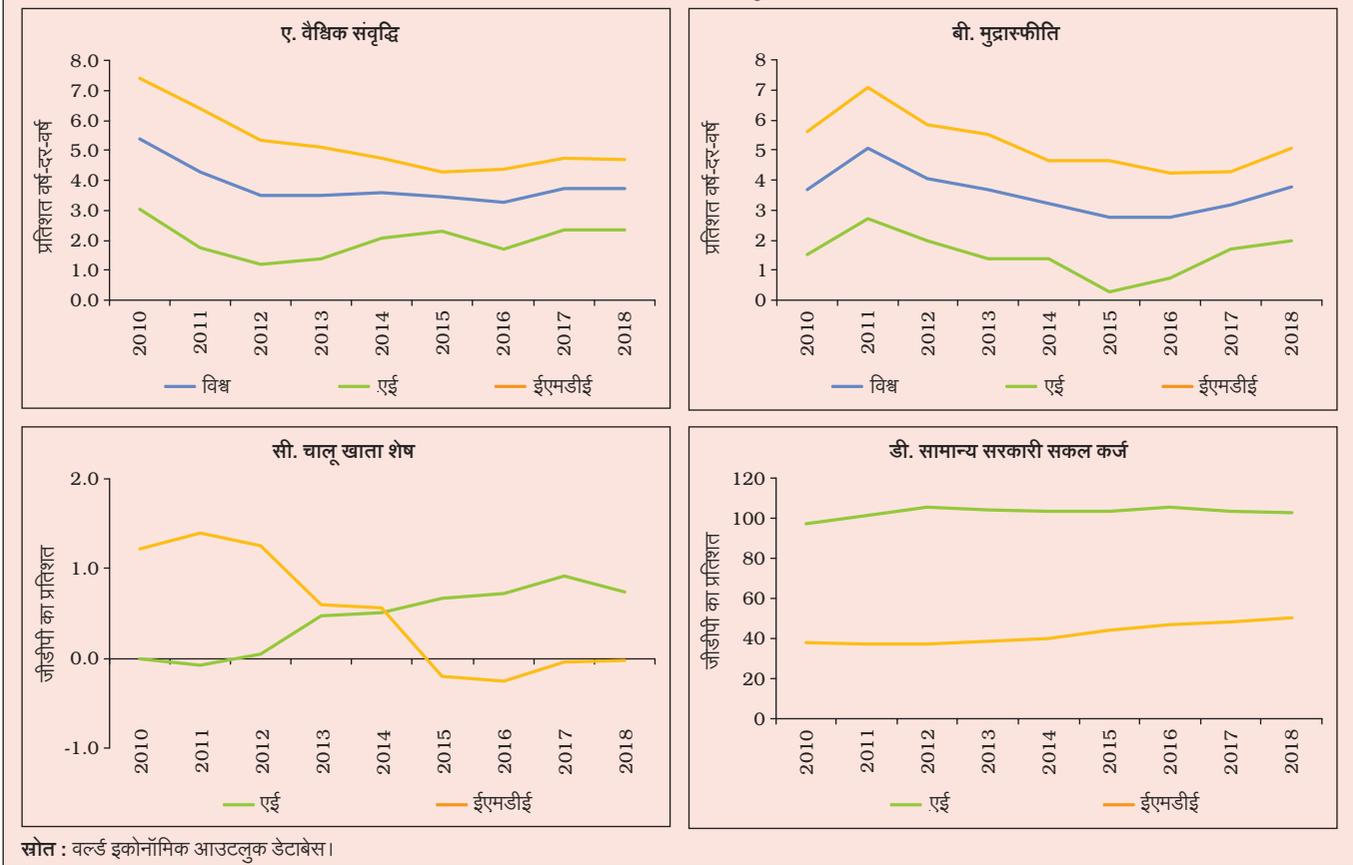
II.3 शेष अध्याय में, भाग 2 के अंतर्गत समष्टि-वित्तीय परिदृश्य का खाका खींचा गया है जिसके आधार पर भाग 3 में कुछेक महत्वपूर्ण संकेतकों के माध्यम से वैश्विक बैंकिंग प्रणाली के कार्यनिष्पादन का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। भाग 4 में प्रमुख ईई और ईएमई की बैंकिंग प्रणालियों की मुख्य गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है। भाग 5 में सबसे बड़े 100 वैश्विक बैंकों के कार्यनिष्पादन का विश्लेषण किया गया

है। बैंकिंग जगत में सभी अधिकार-क्षेत्रों में नीतिगत पहल की गई जिसे वैश्विक वित्तीय संकट के बाद वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) के तत्वावधान में सुधार के लिए की गई पहल से मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस संबंध में हुई प्रगति वर्ष 2017 के साथ-साथ वर्ष 2018 में भी जारी रही, जिस विषय में भाग 6 में विस्तार से बताया गया है। भाग 7 में निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए इस परिदृश्य में निहित कुछ संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया है।

2. समष्टि-वित्तीय परिदृश्य

II.4 सभी ईई और ईएमई में वैश्विक संवृद्धि दर 2017 के दौरान छह वर्षों के उच्चतम स्तर तक पहुंचने और अधिकाधिक व्यापक होने के बाद 2018 में अब तक अपनी गति खोती नजर आयी है और अलग-अलग देशों में इसमें असमानता तथा भिन्नता देखी गयी है। यूएस को छोड़कर कई बड़ी विकसित अर्थव्यवस्थाओं, जैसे यूके और यूरो क्षेत्र में वृद्धि दर मंद पड़ गयी जबकि ईएमई में यह 2017 के स्तर पर लगभग अपरिवर्तित रही केवल कुछेक देशों जैसे – अर्जेंटीना और तुर्की - में कुछ विशिष्ट कारणों के फलस्वरूप घटित गतिविधियों को छोड़कर, जिन्होंने सभी ईएमई में आस्ति श्रेणी के रूप में जोखिम विमुखता का प्रसार किया। ईई में महंगाई दर, हालांकि अभी भी बहुत ही कम है, तेल की कीमतें बढ़ने के साथ-साथ धीरे-धीरे लक्ष्य की ओर बढ़ी जबकि ईएमई में यह थोड़ी ऊंची रही और इसमें भिन्नता भी देखी गयी। वर्ष 2017 के दौरान व्यापार और निवेश में जो उछाल आया था, वह 2018 की पहली छमाही में धीमा पड़ गया क्योंकि बढ़ती अनिश्चितताओं, सार्वजनिक और निजी, दोनों क्षेत्रों के तुलन-पत्रों पर दीर्घावधि तक कर्ज का भार बने रहने और समय-समय पर मचती खलबलियों के

चार्ट II.1: समष्टि परिदृश्य

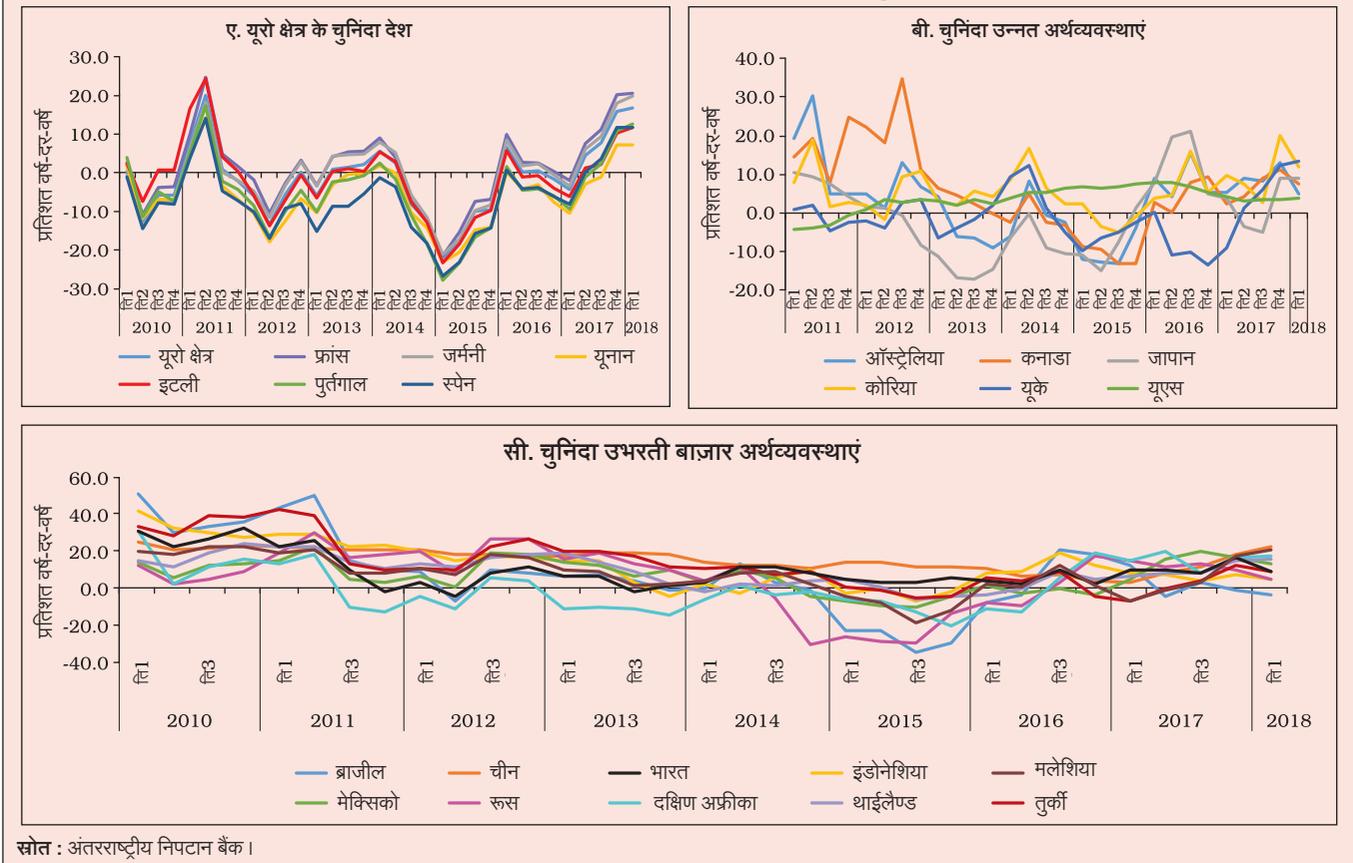


कारण निवेशकर्ताओं की सोच में जोखिम के कम-ज्यादा होने के अनुसार आए बदलावों और पूंजी प्रवाहों के फलस्वरूप पूंजीगत खर्चों में कमी आयी (चार्ट II.1)। व्यापारिक तनावों, यूएस में बढ़ती ब्याज-दरों तथा तुलन-पत्र सामान्यीकरण और भू-राजनीतिक समीकरणों के कारण पड़ने वाले प्रभावों ने जोखिम संतुलन में गिरावट को बढ़ा दिया।

II.5 सभी एई और ईएमई में वर्ष 2017 एवं 2018 की अब तक की अवधि में ऋणों में वृद्धि की दर में तेजी आयी, हालांकि यह वैश्विक और देश विशेष से जुड़ी समष्टि आर्थिक और वित्तीय परिस्थितियों के अनुरूप भिन्न-भिन्न रही। ऋण वृद्धि दर में उतार-चढ़ाव से न केवल वित्तीय चक्र की स्थिति से जुड़ी सूचना प्राप्त होती है, अपितु रीयल इकॉनॉमी से जुड़ी गतिविधियों के सम्मुख मौजूद जोखिमों के बारे में भी पता चलता है। यूरो क्षेत्र के भीतर ऋण वृद्धि दर, जो कि घटक अर्थव्यवस्थाओं में वर्ष 2009 से एक साथ बढ़ती आ रही थी, साथ-साथ चलती रही जिससे यह प्रदर्शित होता है कि सरकारी कर्ज संकट के

आघात से सभी प्रभावित हुए थे और इस आघात की प्रतिक्रिया स्वरूप बनाई गयी नीतियाँ एकसमान थीं (चार्ट II.2)। अन्य एई के बीच ऋण संवृद्धि में अंतर वित्तीय चक्र की भिन्न-भिन्न स्थितियों से देखा जा सकता है। यूएस में, वर्ष 2017 में ऋण वृद्धि दर में गिरावट आयी जो उस वर्ष अर्थव्यवस्था में हुए धीमे विस्तार के कारण थी, परंतु 2018 की पहली छमाही में आर्थिक गतिविधियों में आयी तेजी के बल पर इसमें फिर से उछाल आना प्रारंभ हुआ। जापान में 2016 के दौरान विलय और अधिग्रहण की गतिविधियों के चलते निधियों की मांग में हुई उच्च वृद्धि का प्रभाव जैसे-जैसे समाप्त होने लगा, जिस वजह से ऋण वृद्धि नीचे गिरते हुए 2017 में ऋणात्मक स्तर पर पहुंच गयी। दूसरी ओर, 2016 की तुलना में 2017 में ईएमई में ऋण वृद्धि-दर बढ़ी, हालांकि ब्राजील, इंडोनेशिया और तुर्की इसके अपवाद रहे। ऋण में हुई तीव्र वृद्धि और साथ ही, हाउसहोल्ड कर्ज में आए तेज उछाल के कारण चीन में 2017 के दौरान चिंताएं अत्यधिक बढ़ गयीं।

चार्ट II.2 : निजी गैर-वित्तीय क्षेत्र को बैंक ऋण में वृद्धि



11.6 यूरो क्षेत्र के बैंकों द्वारा दिए जा रहे ऋणों का सर्वेक्षण यह संकेत देता है कि 2018 के दौरान क्रेडिट मानकों में ढील दी गयी जिससे ऋणों में वृद्धि हुई। यूएस में वाणिज्यिक और औद्योगिक ऋणों और जापान में छोटी फर्मों को दिए गए ऋणों के कारण 2018 में यूएस और जापान में ऋण-संवृद्धि बहाल हुई। हालांकि, चीन में आर्थिक गतिविधियां मंद पड़ने, बढ़ते ऋण जोखिमों और व्यापारिक युद्धों के बढ़ते खतरे वाले माहौल में चीन के बैंकों ने 2018 के दौरान ऋण देने में बेरुखी दिखायी।

3. वैश्विक बैंकिंग क्षेत्र का कार्य-निष्पादन

11.7 विश्व के विभिन्न हिस्सों में बैंकिंग प्रणालियां बासेल III मानकों को अपनाने की दिशा में अग्रसर हैं, यद्यपि अलग-अलग गति से और भिन्न-भिन्न स्थितियों से प्रारंभ करते हुए।

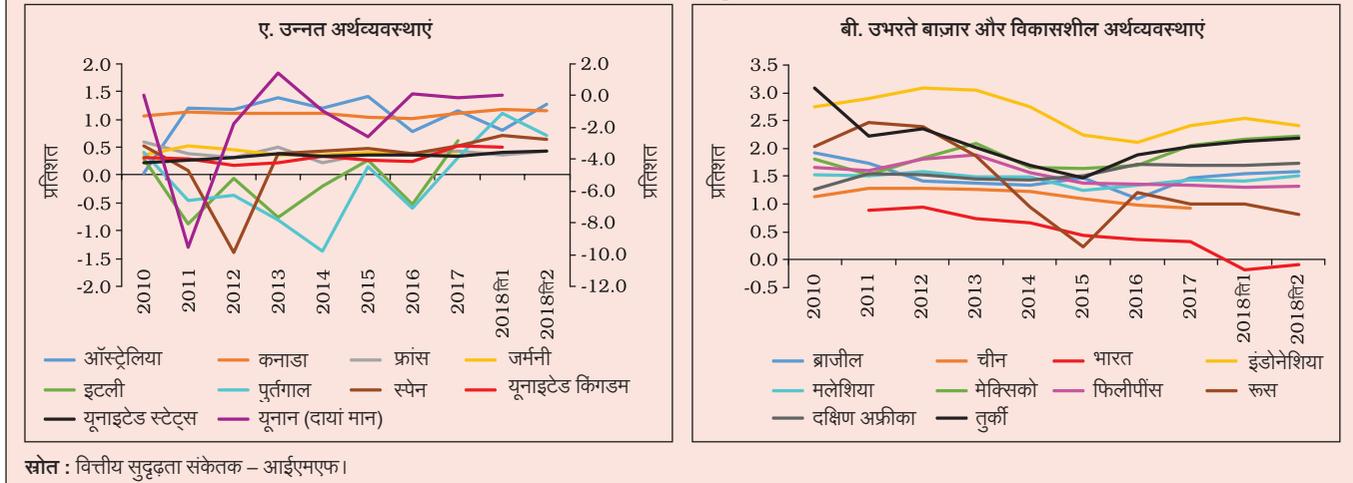
बैंकिंग क्षेत्र के कार्यनिष्पादन के प्रमुख संकेतकों में शामिल हैं लाभप्रदता, आस्ति गुणवत्ता और पूंजी पर्याप्तता, जो सम्मिलित रूप से इसकी मजबूती और आघात-सहनीयता का आकलन करने में मददगार बनते हैं। पूंजी और चलनिधि के उच्चतम स्तरों को प्राप्त करते हुए सभी क्षेत्रों के बैंकों ने अपने तुलन-पत्रों को मजबूत बनाया है। इस संबंध में ईई और ईएमई के बीच एक स्पष्ट अंतर देखने को मिला और वह था - पहली में जहाँ क्रमिक रूप से सुधार आया, वहीं दूसरी में दबावग्रस्त आस्तियाँ बढ़ने के कारण कमजोरी के लक्षण दिखायी दिए।

3.1 आस्तियों पर प्रतिलाभ

11.8 यूरो क्षेत्र की समष्टि आर्थिक परिस्थितियों में सुधार आया और उन्हें कमजोर बना देने वाले संकट के कुप्रभाव धीरे-धीरे समाप्त होकर बैंकों की उच्चतर लाभप्रदता¹ में परिवर्तित हुए,

¹ लाभप्रदता को आस्तियों पर प्रतिलाभों (आरओए) के संदर्भ में मापा जाता है जिसे कुल औसत आस्तियों में निवल आय के अनुपात के रूप में परिभाषित किया गया है।

चार्ट II.3: आस्तियों पर प्रतिलाभ : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाएं



हालांकि कुछ देशों में स्थिति इससे भिन्न रही (चार्ट II.3)। यूरो क्षेत्र के बैंकों में, नुकसान में चल रहे इटली और पुर्तगाल के बैंक 2017 के दौरान फायदे की स्थिति में आ गए जो इनमें डूबंत ऋणों हेतु किए जाने वाले प्रावधानों में आयी कमी, परिचालन-दक्षता में सुधार और आस्ति-हास में कमी के रूप में परिलक्षित होता है। यूनान के बैंक जो 2016 में थोड़ी लाभप्रदता दर्शा रहे थे, 2017 में पुनः नुकसान की स्थिति में पहुंच गए जिसके पीछे मुख्य कारण डूबंत ऋणों के लिए प्रावधान में वृद्धि किया जाना ही था। वर्ष 2018 के लिए अब तक उपलब्ध जानकारी के अनुसार, बैंकों की लाभप्रदता में लगातार सुधार हो रहा है, विशेष रूप से पुर्तगाल और स्पेन में। यूरो क्षेत्र में लंबे समय तक ब्याज दरों के कम बने रहने से वित्तपोषण तो आसान बना रहा, परंतु इससे बैंकों के लिए निवल ब्याज मार्जिन कम हो गया और उनकी लाभप्रदता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। अन्य एई, जैसे कनाडा और ऑस्ट्रेलिया के बैंकों की लाभप्रदता लगातार बढ़ी। एकबारगी हुई कर-वृद्धि और ब्याजेतर खर्च अधिक रहने के कारण यूएस के बैंकों में आरओए 2017 में थोड़ा घट गया था, परंतु 2018 में निवल परिचालन राजस्व में वृद्धि होने के कारण उसमें सुधार आया।

II.9 अनर्जक ऋणों के कारोबारी परिणामों की भांति ही ईएमई के बैंकों के आरओए में उतार-चढ़ाव वर्ष 2017 और 2018 में अब तक मिला-जुला रहा है। जहाँ रूस, भारत और

चीन के बैंकों को गिरावट का सामना करना पड़ा, वहीं ब्राजील, मेक्सिको और इंडोनेशिया के बैंकों ने अपने आरओए में 2017 के साथ-साथ 2018 में भी भारी वृद्धि दर्ज की (सारणी II.1)। रूस के बैंकों की लाभप्रदता पर उल्लेखनीय रूप से प्रतिकूल प्रभाव पड़ा क्योंकि वहाँ कई बड़े बैंकों को वित्तीय समाधान की प्रक्रिया से गुजरने के कारण हानि के लिए अधिक प्रावधान करना पड़ा था। दूसरी ओर, भारत के बैंकों को कमजोर आस्ति गुणवत्ता के कारण नुकसान उठाना पड़ा और 2017 एवं 2018 में अब तक उनका आरओए 2008 से अपने न्यूनतम स्तर पर पहुंच गया है। अपने समकक्ष एशियाई ईएमई की तुलना में इंडोनेशिया के बैंक 2017 के दौरान और 2018 में अब तक की अवधि में सबसे लाभप्रद स्थिति में रहे क्योंकि उनकी परिचालन लागत में कमी आयी जिसके परिणामस्वरूप उनकी क्षमता में वृद्धि हुई।

3.2 पूंजी पर्याप्तता

II.10 वर्ष 2017 में और 2018 में अब तक ईएमई और एई दोनों में पूंजी की स्थिति अच्छी बनी रही और यह निर्धारित स्तर से अधिक रही। एई के बैंकों ने वर्ष 2017 के दौरान 2016 की तुलना में अधिक पूंजी बफर तैयार किया (चार्ट II.4)। यूके के बैंकों में जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात (सीआरएआर) सर्वाधिक रहा, हालांकि एक वर्ष पहले

सारणी II.1: आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए, प्रतिशत)

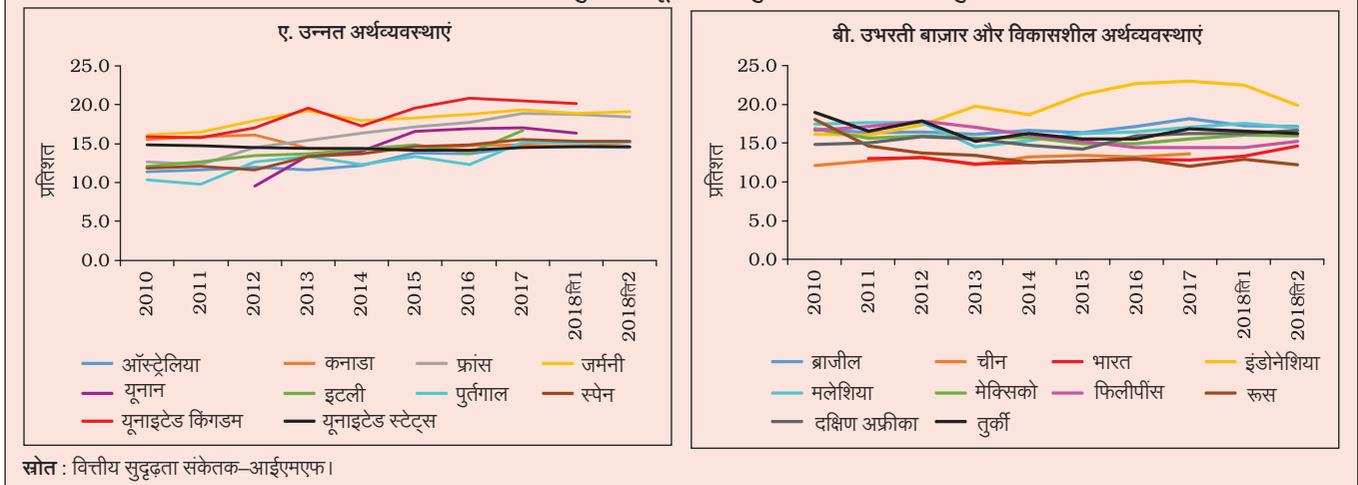
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं												
देश	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018लि1	2018लि2
ऑस्ट्रेलिया	1.25	0.9	0.03	1.19	1.18	1.38	1.20	1.42	0.78	1.15	0.81	1.27
कनाडा	0.54	0.73	1.06	1.13	1.11	1.10	1.11	1.04	1.02	1.11	1.19	1.17
फ्रांस	0.13	0.29	0.59	0.39	0.31	0.49	0.23	0.40	0.40	0.42	0.36	0.43
जर्मनी	-0.10	0.21	0.37	0.53	0.45	0.36	0.37	0.40	0.37	0.37	-	-
यूनान	0.92	0.37	0.00	-9.52	-1.79	1.44	-0.97	-2.55	0.09	-0.17	0.07	-
इटली	0.34	0.31	0.29	-0.87	-0.06	-0.77	-0.20	0.26	-0.53	0.61	-	0.29
पुर्तगाल	0.34	0.45	0.40	-0.45	-0.37	-0.80	-1.36	0.16	-0.59	0.32	1.11	0.72
स्पेन	0.79	0.59	0.53	0.09	-1.39	0.38	0.43	0.48	0.39	0.52	0.71	0.65
यूके	-0.08	0.00	0.32	0.29	0.17	0.22	0.33	0.28	0.25	0.52	0.50	-
यूएस	-	0.22	0.23	0.28	0.33	0.38	0.33	0.36	0.37	0.34	0.40	0.43
उभरती अर्थव्यवस्थाएं												
देश	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018लि1	2018लि2
अर्जेंटीना	2.00	3.59	3.98	3.91	4.35	5.04	6.11	6.09	5.34	4.20	3.94	4.66
ब्राजील	2.12	1.75	1.92	1.73	1.41	1.38	1.35	1.48	1.11	1.47	1.54	1.59
चीन	-	-	1.13	1.28	1.28	1.27	1.23	1.1	0.98	0.92	-	1.03
भारत	0.95	-	-	0.89	0.95	0.74	0.67	0.45	0.37	0.33	-0.19	-0.09
इंडोनेशिया	2.39	2.61	2.74	2.89	3.1	3.05	2.74	2.25	2.12	2.41	2.54	2.41
मलेशिया	1.47	1.25	1.54	1.51	1.58	1.49	1.49	1.24	1.35	1.44	1.41	1.50
मेक्सिको	1.40	1.48	1.81	1.54	1.83	2.08	1.66	1.63	1.69	2.05	2.17	2.23
फिलीपींस	-	1.40	1.65	1.60	1.81	1.88	1.57	1.38	1.35	1.34	1.30	1.31
रूस	2.06	0.72	2.04	2.47	2.39	1.87	0.95	0.23	1.2	1.01	1.00	0.81
दक्षिण अफ्रीका	1.58	1.15	1.26	1.54	1.52	1.45	1.43	1.51	1.71	1.70	1.70	1.73
तुर्की	2.50	3.27	3.08	2.23	2.35	2.02	1.69	1.48	1.89	2.04	2.13	2.19

टिप्पणी : उपलब्ध नहीं है।
टिप्पणी : गहरा लाल रंग दीर्घावधि में देश के सबसे कम आरओए को दर्शाता है जबकि गहरा हरा रंग दीर्घावधि में देश के सबसे ज्यादा आरओए का परिचायक है।
स्रोत : वित्तीय सुदृढता संकेतक, आईएमएफ।

की स्थिति की तुलना में उसमें थोड़ी गिरावट रही। यूके के बैंकों में इस अनुपात का अधिक होना दो बातें दर्शाता है- पूंजी का उच्च स्तर और तुलन-पत्र में जोखिम में आयी कमी। बैंक ऑफ इंग्लैंड द्वारा 2017 में कराए गए दबाव परीक्षण से यह पता चला

कि किसी भी बैंक के लिए अपनी पूंजी की स्थिति और मजबूत करना अपेक्षित नहीं है, जिससे यूके बैंकिंग प्रणाली की सुदृढता की पुष्टि होती है।

चार्ट II.4: जोखिम भारत आस्तियों की तुलना में पूंजी का अनुपात (सीआरएआर) : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाएं



11.11 वर्ष 2017 में सभी ईएमई के बैंकों में भी सीआरएआर की स्थिति में सुधार हुआ और ये न्यूनतम विनियामकीय अपेक्षा से काफी अधिक स्तर पर रहे (सारणी 11.2), यद्यपि भारत और रूस के बैंकों में अनर्जक ऋणों (एनपीएल) के बढ़ते अनुपात और आरओए में गिरावट के कारण उनके सीआरएआर में कमी आयी है। पूर्वी एशिया में वर्ष 1997-98 के संकट के बाद इंडोनेशिया में किए गए सुधारों ने हाल के वर्षों में अपना असर दिखाया है क्योंकि यहाँ के बैंक अपने समकक्षों में सर्वाधिक पूंजी पर्याप्तता वाले बैंक बनकर उभरे हैं।

3.3 आस्ति गुणवत्ता

11.12 अनर्जक ऋण (एनपीएल)² अनुपात द्वारा मापी जाने वाली आस्ति गुणवत्ता में भी ईई के सभी बैंकों में सुधार देखा गया, केवल ग्रीस के उन बैंकों को छोड़कर, जो अभी भी सरकारी कर्ज संकट के आंतरिक प्रभावों से जूझ रहे हैं (चार्ट 11.5)। अन्य देशों, जैसे पुर्तगाल, इटली और स्पेन में पर्याप्त सुधार देखा गया जो मुख्य रूप से तेजी से हुई आर्थिक बहाली के कारण था।

11.13 प्रमुख ईएमई के बैंकों के एनपीएल अनुपात कम बने रहे जिससे समष्टि आर्थिक कार्यनिष्पादन में सुधार परिलक्षित होता है और इससे आस्ति गुणवत्ता पर दबाव कम करने में सहायता मिली। भारत और रूस इसके उल्लेखनीय अपवाद रहे जहाँ 2017 में एनपीएल अनुपात द्विअंकीय था, और 2018 में इसकी स्थिति और भी बिगड़ गयी।

3.4 लीवरेज अनुपात

11.14 लीवरेज अनुपात³ ने वैश्विक आर्थिक संकटोत्तर काल की तरफ ध्यान आकर्षित किया है, क्योंकि जोखिम भार बैंकों के तुलन पत्रों में धीरे-धीरे फैलते दबावों को दर्शाने में अपर्याप्त नज़र आ रहे थे। तदनुसार, लीवरेज अनुपात पर जारी किए गए विशिष्ट निर्देश बासेल III प्रेमवर्क की निर्धारक विशेषता बन गयी हैं। ईई में बैंक ने 2017 एवं 2018 में न्यूनतम 3 प्रतिशत के विनियामकीय निर्देश से कहीं ज्यादा लीवरेज अनुपात बरकरार रखा है। स्पेन और यूके स्थित बैंकों को छोड़कर अन्य सभी ने लीवरेज अनुपातों में 2017

सारणी 11.2: जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी का अनुपात (सीआरएआर, प्रतिशत)

उन्नत अर्थव्यवस्थाएं												
देश	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018 ¹	2018 ²
ऑस्ट्रेलिया	11.34	11.91	11.40	11.58	11.92	11.60	12.21	13.80	13.65	14.55	14.62	14.46
कनाडा	12.22	14.69	15.57	15.89	16.16	14.33	14.23	14.20	14.77	14.81	14.64	15.20
फ्रांस	10.47	12.36	12.67	12.32	14.50	15.38	16.35	17.10	17.75	18.91	18.72	18.44
जर्मनी	13.59	14.82	16.05	16.40	17.94	19.16	17.96	18.26	18.79	19.38	18.85	19.09
यूनान	9.97	11.73	12.26	-	9.57	13.51	14.07	16.52	16.95	17.02	16.37	-
इटली	10.38	11.65	12.07	12.68	13.42	13.70	14.30	14.79	13.75	16.71	-	16.03
पुर्तगाल	9.36	10.54	10.33	9.78	12.64	13.31	12.25	13.33	12.27	15.19	15.01	15.20
स्पेन	11.29	12.22	11.87	12.11	11.59	13.28	13.68	14.66	14.85	15.54	15.31	15.30
यूके	12.92	14.80	15.89	15.73	17.07	19.61	17.31	19.62	20.80	20.5	20.19	-
यूएस	-	13.86	14.79	14.69	14.51	14.41	14.39	14.14	14.19	14.53	14.55	14.64
उभरती अर्थव्यवस्थाएं												
देश	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018 ¹	2018 ²
अर्जेंटीना	16.87	18.81	17.67	15.61	17.12	13.61	14.67	13.28	16.66	15.57	15.90	14.85
ब्राजील	17.70	18.65	16.89	16.33	16.43	16.11	16.67	16.36	17.16	18.15	17.25	17.17
चीन	-	-	12.16	12.71	13.25	12.19	13.18	13.45	13.28	13.65	-	13.57
भारत	12.98	14.34	15.19	13.05	13.13	12.32	12.48	12.68	12.97	12.82	13.31	14.60
इंडोनेशिया	17.51	17.82	16.18	16.08	17.32	19.82	18.72	21.28	22.69	23.01	22.50	19.87
मलेशिया	16.06	18.21	17.45	17.70	17.64	14.58	15.36	16.28	16.48	17.08	17.54	16.98
मेक्सिको	15.31	16.51	16.86	15.67	15.95	15.60	15.75	14.96	14.90	15.57	16.00	15.92
फिलीपींस	-	15.54	16.69	17.12	17.82	17.02	16.08	15.28	14.46	14.42	14.45	15.23
रूस	16.80	20.87	18.09	14.66	13.69	13.46	12.49	12.70	13.07	12.07	12.97	12.21
दक्षिण अफ्रीका	13.01	14.12	14.88	15.05	15.88	15.58	14.76	14.20	15.93	16.27	16.23	16.64
तुर्की	17.99	20.62	18.97	16.55	17.89	15.28	16.28	15.57	15.57	16.85	16.56	16.26

- : उपलब्ध नहीं है।

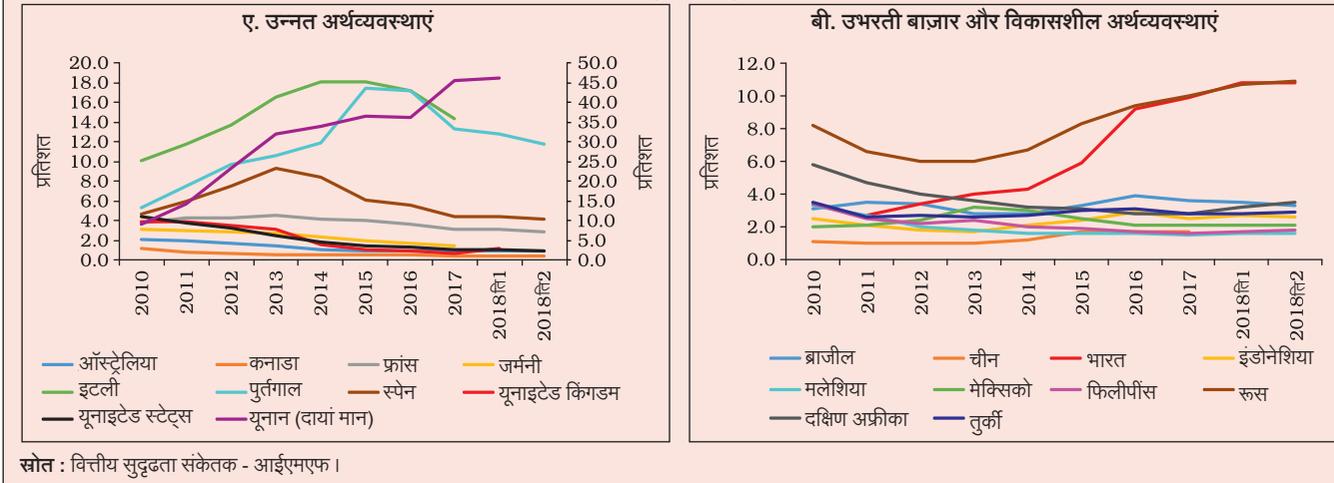
टिप्पणी : गहरा लाल रंग दीर्घवधि में देश के सबसे कम सीआरएआर को दर्शाता है जबकि गहरा हरा रंग दीर्घवधि में देश के सबसे ज्यादा सीआरएआर का परिचायक है।

स्रोत : वित्तीय सुदृढता संकेतक, आईएमएफ।

² कुल ऋणों में अनर्जक ऋणों का अनुपात।

³ कुल अभारित आस्तियों में पूंजी का अनुपात।

चार्ट II.5: अनर्जक ऋण अनुपात : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाएं



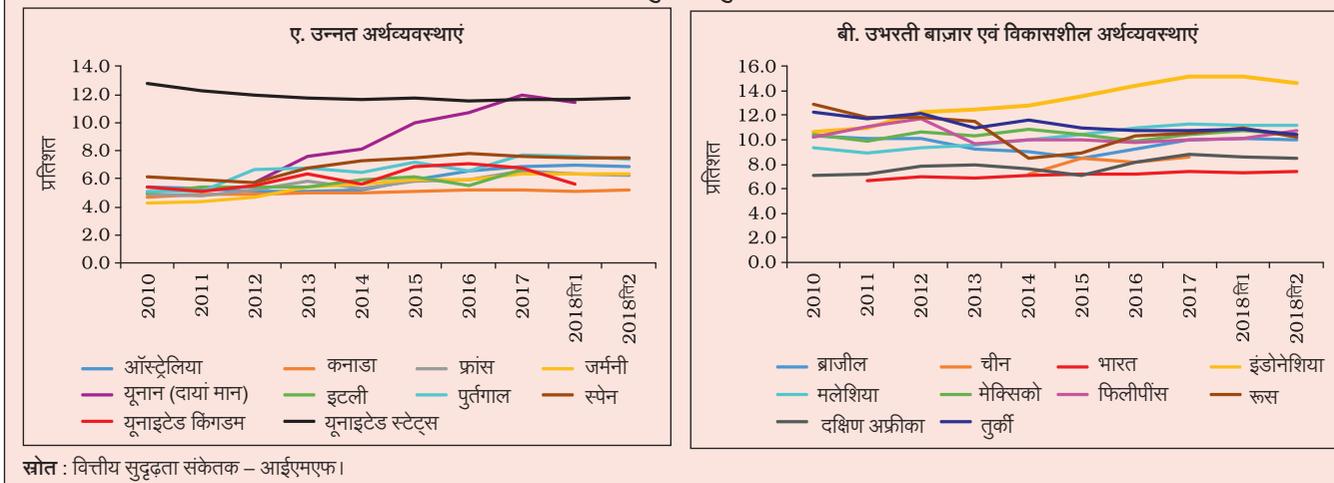
में सुधार रिपोर्ट किया है (चार्ट II.6)। ईएमई में चीन, भारत और दक्षिण अफ्रीका के बैंकों को छोड़कर बाकी सभी ने निर्धारित स्तरों से तीन गुना ज्यादा लीवरेज अनुपात बरकरार रखा है।

3.5 वित्तीय बाजार के संकेतक

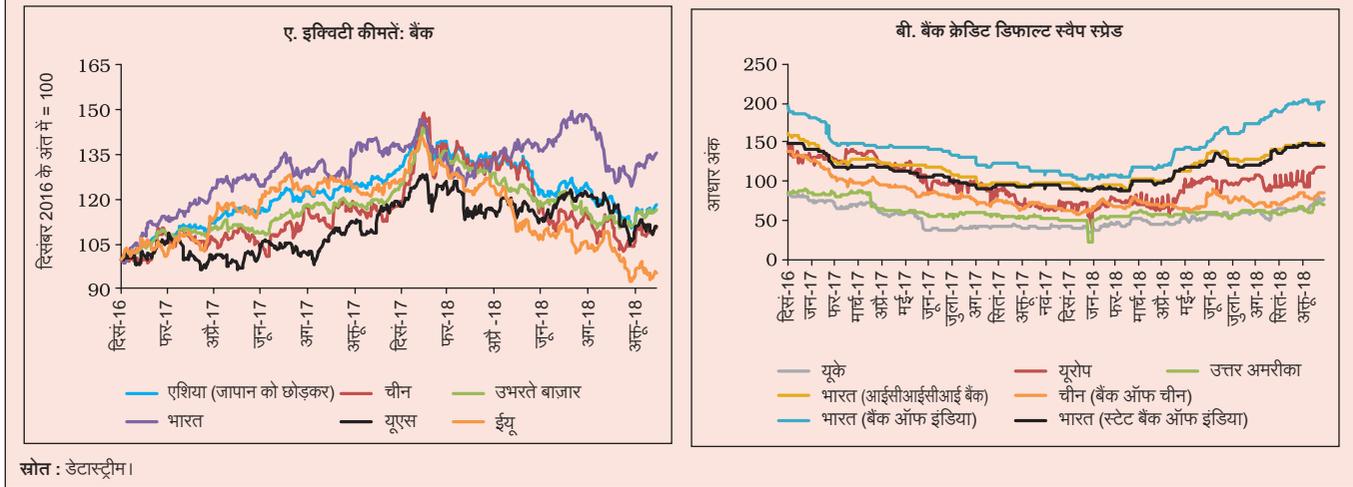
II.15 बैंकों के सम्पूर्ण स्वास्थ्य में सुधार को अधिप्रमाणित करते हुए, बाजार-आधारित संकेतकों ने 2017 में निरंतर सुधार दर्शाया (चार्ट II.7)। फिर भी, 2018 की शुरुआत में, व्यापार युद्ध, चीन की अर्थव्यवस्था मंद पड़ने एवं यूरोपीय संघ (ईयू) की बैंकिंग समस्याओं में वृद्धि के चलते संपूर्ण कारोबार की अनिश्चितताएं बढ़ने की वजह से बैंक की इक्विटी कीमतों में भारी गिरावट आई। 2018 की दूसरी तिमाही में अन्य क्षेत्राधिकारों में बैंकों की इक्विटी कीमतों पर दबाव लगातार बना रहा लेकिन

भारतीय बैंकों ने बैंक पुनर्पूजीकरण जैसे उपायों के मामले में अपने समकक्षों से आगे बढ़ते हुए विपरीत रुख दर्शाया। फिर भी, 2018 की तीसरी तिमाही में, भारतीय बैंकों के स्क्रिप्स में गिरावट अवश्यभावी थी क्योंकि आसित गुणवत्ता की समस्याओं के साथ धोखाधड़ी एवं कॉर्पोरेट गवर्नन्स के मुद्दे भी उभरकर सामने आये। वर्ष 2017 में क्रेडिट डिफाल्ट स्वैप (सीडीएस) के विस्तार में कमी आयी क्योंकि निवेशक बैंक स्टॉक को लेकर फिर से आशावदी होने लगे। यूके एवं उत्तर कोरिया में स्थित बैंकों के मामले में निम्नतम सीडीएस स्प्रेड दर्ज किया गया। दूसरी तरफ, अन्य एई एवं ईएमई में जोखिम का सामान्य तौर पर पुनः कीमत निर्धारण के कारण बैंक का सीडीएस स्प्रेड 2017 की अपेक्षा 2018 में बढ़ा।

चार्ट II.6: लीवरेज अनुपात : चुनिंदा अर्थव्यवस्थाएं



चार्ट II.7: बैंक के स्वास्थ्य का बाजार-आधारित संकेतक



4. चुनिंदा अर्थव्यवस्थाओं में संपूर्ण बैंकिंग गतिविधियां

II.16 एई स्थित बैंकों ने 2017 और 2018 में अपने प्रदर्शन में सामान्यतः सुधार किया जो उनकी बेहतर आस्ति गुणवत्ता, उन्नत सीआरएआर एवं मजबूत और पतले ढांचे को दर्शाता है। इसके विपरीत, ईएमई स्थित बैंकों का प्रदर्शन देश-विशिष्ट एवं अतार्किक कारणों से खराब रहा।

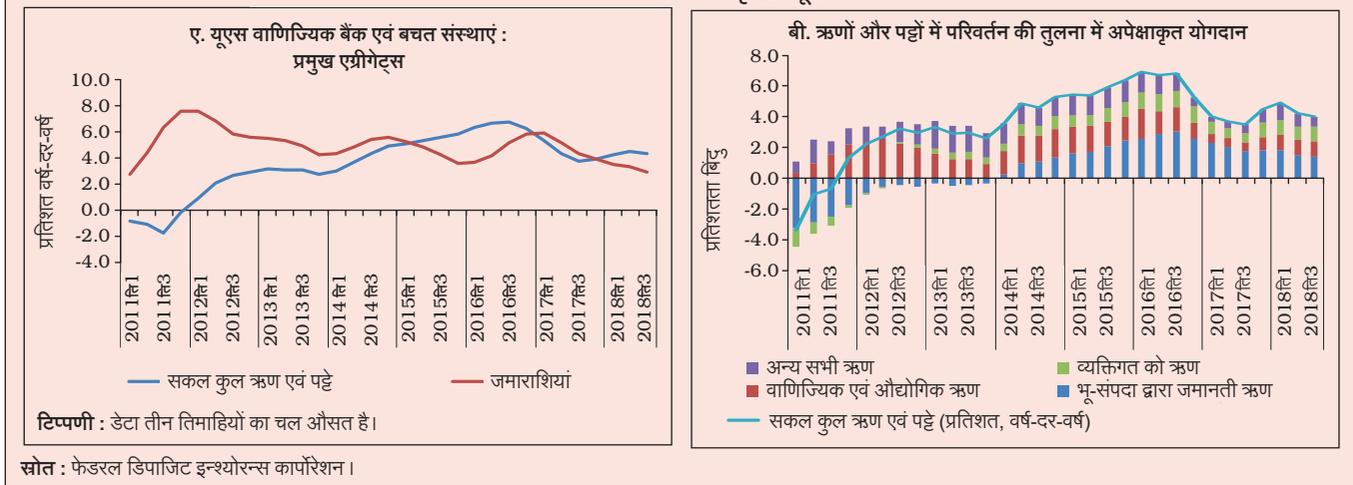
4.1 यूएस

II.17 वर्ष 2017 में संयुक्त राज्य की बैंकिंग प्रणाली में बैंक ऋणों के सभी वर्गों में ऋण की वृद्धि में कमी आई (चार्ट II.8)।

इसके पीछे कई कारण हैं जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं किंतु वहीं तक सीमित नहीं हैं, जैसे, कारोबार संबंधी ऋणों की मांग में कमी, ग्राहकों की मालसूचियों के वित्तपोषण के लिए जरूरत का घट जाना एवं सबप्राइम क्रेडिट कार्ड और वाहन ऋण संबंधी मानकों में सख्ती बरतना। हालांकि, 2018 में ऋणों में जोरदार वृद्धि होने की बदौलत फेरबदल हुआ जिसे वाणिज्यिक एवं औद्योगिक ऋणों में बहाली से सहारा मिला।

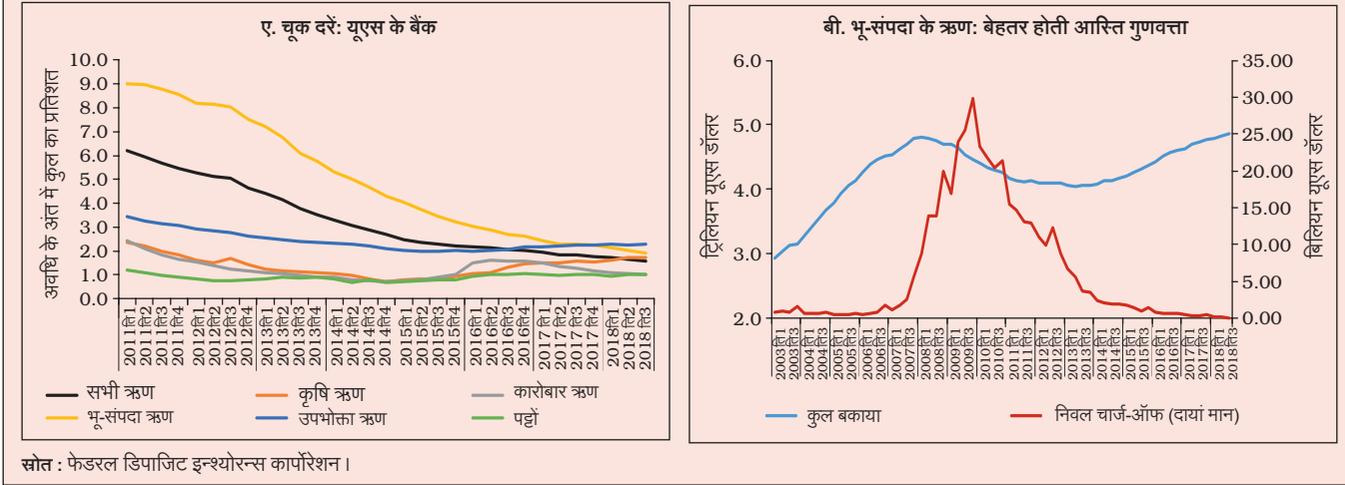
II.18 यूएस के बैंकों में 2017 में विलंब की निम्नतर दरों की वजह से आस्ति गुणवत्ता बढ़ी, विशेष रूप से 2017 की तीसरी तिमाही से भू-संपदा ऋणों के संबंध में। इसके अतिरिक्त,

चार्ट II.8: ऋण एवं जमा वृद्धि : यूएस



⁴ विलंबित भुगतान ऋणों में ऐसे ऋण आते हैं जो पिछले 30 दिनों या अधिक से बकाया हैं एवं उन पर ब्याज अभी भी उपचित हो रहे हैं और साथ ही, वे जो अनुपचित स्थिति में हैं। इनको अवधि की समाप्ति पर ऋणों के अनुपात के रूप में मापा जाता है।

चार्ट II.9: बेहतर होती आरिस्त गुणवत्ता: यूएस के बैंक

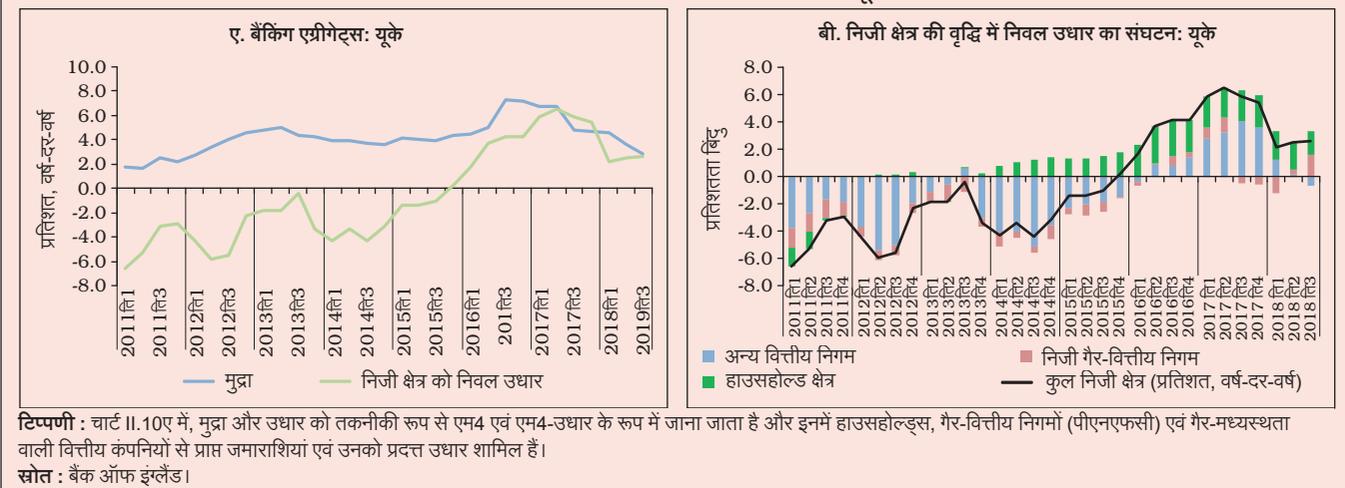


बकाया भू-संपदा ऋणों में पिछले चार वर्षों की अपेक्षा वृद्धि होने के बावजूद 2017 में निवल चार्ज-ऑफ⁵ इस दशक में सबसे नीचे गिरा (चार्ट II.9)। उल्लेखनीय है कि हाउसहोल्ड ऋण जोखिम में वृद्धि बाज़ार के मार्टगेज सेगमेंट में स्थित नहीं थी। वर्ष 2017 में सबप्राइम क्रेडिट कार्ड और वाहन ऋणों में विलंब के बड़े मामले पाए गए जबकि कृषि में 2016 की शुरुआत से तथा उपभोक्ता ऋणों में वर्तमान वर्ष में (तीसरी तिमाही:2018 तक) विलंब की उच्चतर दर पायी गई थी।

4.2 यूके

II.19 यूके में पूंजीगत अनुपातों एवं चलनिधि स्थितियों में निरंतर सुधार होने की बदौलत बैंकों की आघात सहने की क्षमता पिछले दशक की अपेक्षा बढ़ी। मजबूत तुलन पत्रों की बदौलत बैंक सुधरती आर्थिक गतिविधि की ऋण जरूरतों को पूरा करने के कार्य में फिर से जुट पाए, यद्यपि 2017 की दूसरी तिमाही से उपभोक्ता ऋण वृद्धि धीमी पड़ गयी और लघु कंपनियों के लिए ऋण की स्थितियां सख्त रहीं (चार्ट II.10)। वर्ष 2018 की पहली तिमाही में निधीयन की लागत में थोड़ी

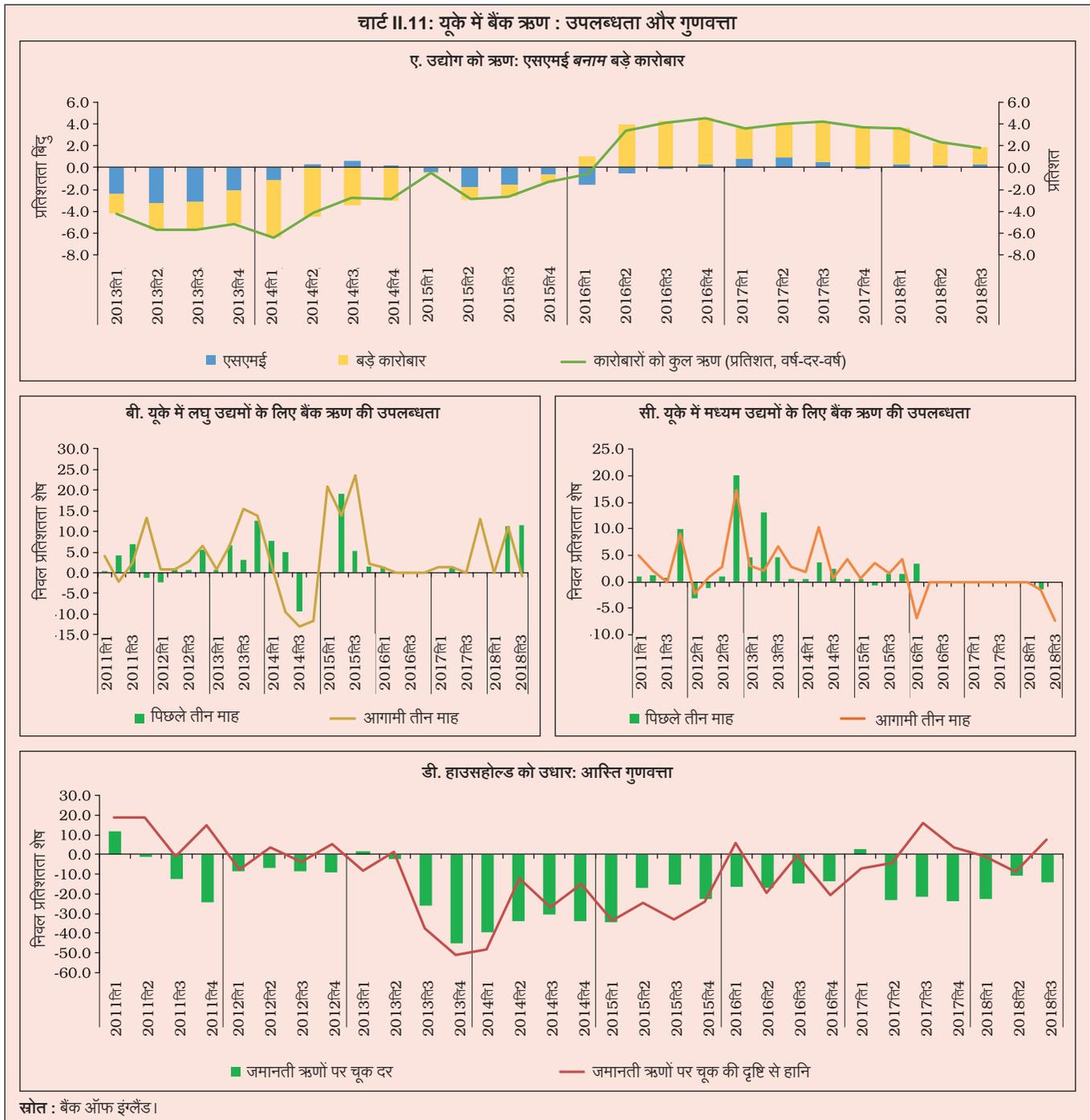
चार्ट II.10: बैंक ऋण एवं जमा : यूके



⁵ कुल चार्ज ऑफ (न वसूले जा सकने के कारण तुलन पत्र से हटाया गया) ऋणों और पट्टों में से पूर्व में चार्ज ऑफ ऋणों और पट्टों से वसूली गई राशियों को घटाकर।

वृद्धि हुई, भले ही वह ऐतिहासिक मानकों से अभी भी कम है, जिससे स्वैप दरों में आंशिक वृद्धि परिलक्षित होती है। जहां हाल की तिमाहियों में निजी गैर-वित्तीय निगमों को प्रदत्त ऋणों ने जोर पकड़ा वहीं अन्य वित्तीय निगमों को प्रदत्त बैंक ऋणों में गिरावट आई है।

II.20 वर्ष 2017 में औद्योगिक ऋण में वृद्धि का मुख्य कारण बड़े कारोबारों को प्रदत्त ऋण था (चार्ट II.11ए)। वर्ष 2018 में यह वृद्धि कम हो रही है। बैंक ऑफ इंग्लैंड के ऋण स्थिति सर्वेक्षण (बीओई-सीसीएस) के अनुसार एसएमई को उपलब्ध होने वाले ऋणों में कमी की संभावना है, जबकि मध्यम



आकार वाले उद्यमियों के लिए ऋण स्थितियां काफी हद तक अपरिवर्तित रहेंगी (चार्ट II.11बी एवं सी)। वर्ष 2017 में हाउसहोल्ड को प्रदत्त जमानती ऋणों में चूक दर में कमी आई है, जबकि चूक के मद्देनजर हानि (एलजीडी) की मात्रा 2017 की तीसरी तिमाही तक बढ़ी और तत्पश्चात 2018 की तीसरी तिमाही में पुनः बढ़ने के पहले 2017 की चौथी तिमाही और 2018 की पहली दो तिमाहियों में घटी (चार्ट II.11डी)।

4.3 यूरो क्षेत्र

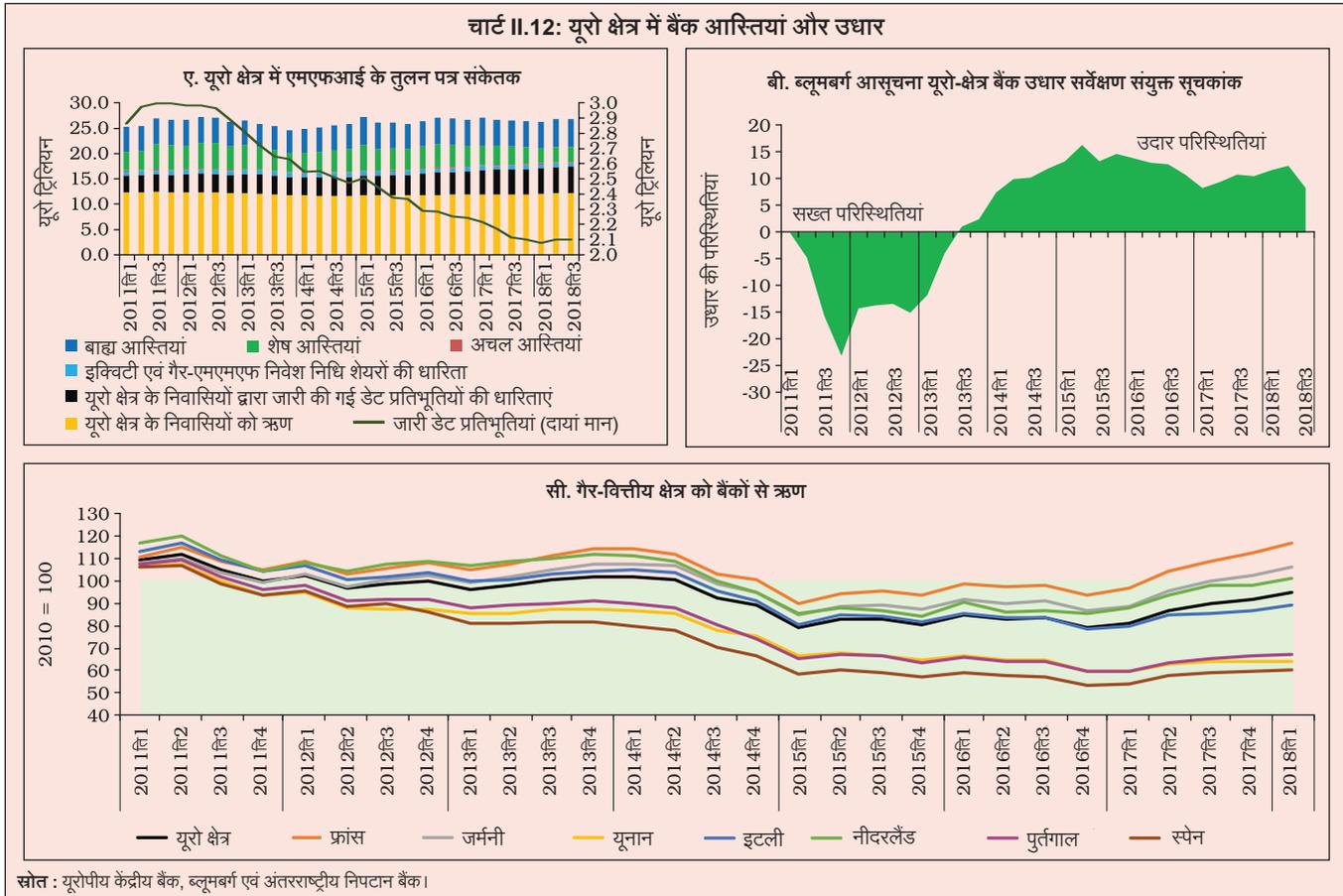
II.21 यूरो क्षेत्र में बैंक पतले और मजबूत हुए हैं, जो छोटे तुलन पत्रों एवं बेहतर पूंजी स्थितियों से सुस्पष्ट होता है। समेकन प्रक्रिया के हिस्से के रूप में, निधि आस्ति वृद्धि को डेट प्रतिभूतियों के निर्गमों में भारी गिरावट के साथ मौद्रिक वित्तीय संस्थाओं (एमएफआई) के तुलन पत्रों में कमी आई है (चार्ट II.12ए)। ऋण सर्वेक्षण से पता चलता है कि बैंक की उधार दरों में नीतिगत आधार पर कटौती करने के साथ ही ऋणों

की उपलब्धता में विस्तार करने की वजह से यूरो क्षेत्र में ऋण स्थितियां सहज हुईं (चार्ट II.12बी एवं सी)।

II.22 लाटविया और एस्टोनिया को छोड़कर पूरे यूरो क्षेत्र में बैंकों की आस्ति गुणवत्ता बेहतर हुई। समग्र रूप से, एनपीएल अनुपात हाल के वर्षों में घटते हुए 2018 की पहली तिमाही में 3.9 प्रतिशत पर पहुंचा, लेकिन भिन्न-भिन्न देशों के बीच काफी विविधता मौजूद है। उदाहरण के लिए, यूनान, साइप्रस, पुर्तगाल और इटली इन चार देशों में बैंकों का एनपीएल अनुपात 2017 के अंत में 10 प्रतिशत से अधिक था, क्योंकि लंबी एवं मंहंगी न्यायिक प्रक्रियाओं और एनपीएल के लिए बाज़ार की कमी की वजहों से त्वरित समाधान में बाधा उत्पन्न हुई (सारणी II.3)।

II.23 वर्ष 2017 के दौरान उदार मौद्रिक नीति एवं केंद्रीय बैंक द्वारा बड़े पैमाने पर आस्ति क्रय करने की वजह से बैंक निधीयन बाज़ार स्थिर रहे, जिसमें थोक निधीयन के बजाय

चार्ट II.12: यूरो क्षेत्र में बैंक आस्तियां और उधार



सारणी II.3: अनर्जक ऋणों और अग्रिमों का अनुपात (एनपीएल अनुपात, प्रतिशत)

देश / क्षेत्र	सितं-15	दिसं-15	मार्च-16	जून-16	सितं-16	दिसं-16	मार्च-17	जून-17	सितं-17	दिसं-17	मार्च-18
ऑस्ट्रिया	7.4	6.9	6.5	6.0	5.8	5.1	4.6	4.3	4.0	3.7	3.4
बेल्जियम	3.9	3.9	3.7	3.6	3.4	3.2	2.9	2.8	2.7	2.6	2.4
साइप्रस	50.0	48.9	48.5	47.4	46.7	45.0	43.8	42.7	40.6	38.9	38.9
एस्टोनिया*	उ.न.	उ.न.	1.6	1.5	1.4	1.3	1.3	1.3	1.3	1.7	1.9
फिनलैंड	1.4	1.6	1.5	1.5	1.5	1.6	1.6	1.7	1.6	1.5	1.3
फ्रांस	4.2	4.0	4.0	3.9	3.7	3.7	3.5	3.4	3.2	3.1	3.2
जर्मनी	3.1	3.0	2.9	2.6	2.5	2.5	2.4	2.2	2.1	1.9	1.7
यूनान	43.5	46.2	46.6	46.9	47.1	45.9	46.2	46.5	46.6	44.9	45.3
आयरलैंड	19.6	17.8	15.1	14.6	14.4	12.3	11.5	11.8	11.4	10.5	8.2
इटली	16.9	16.8	16.6	16.4	16.4	15.3	14.8	12.2	11.8	11.1	10.8
लाटविया	4.9	4.0	3.9	3.7	3.6	3.2	2.9	2.7	2.6	2.3	4.0
लिथुआनिया	5.5	5.1	4.9	4.5	4.1	3.8	3.7	3.3	3.1	2.8	3.0
लक्समबर्ग	1.4	1.1	1.2	1.0	1.2	1.1	1.1	1.1	1.2	0.7	0.8
माल्टा	6.3	6.2	5.6	5.4	4.6	4.4	4.2	3.9	3.6	3.5	3.5
नीदरलैंड	2.8	2.8	2.7	2.7	2.6	2.5	2.4	2.5	2.4	2.3	2.2
पुर्तगाल	18.8	19.6	19.8	20.1	19.8	19.5	18.4	17.5	16.6	15.2	13.6
स्लोवाकिया	5.2	5.2	5.0	4.8	4.6	4.2	4.1	3.8	3.6	3.4	3.3
स्लोवेनिया	24.6	21.5	19.7	19.2	16.3	14.4	13.5	13.3	12.6	10.5	9.3
स्पेन	6.8	6.3	6.3	6.0	5.9	5.7	5.5	5.4	4.8	4.5	4.5
यूरोपीय संघ	5.9	5.7	5.6	5.4	5.3	5.1	4.8	4.5	4.2	4.1	3.9

*: डेटा नहीं बताया गया है क्योंकि वह तीन से कम संस्थाओं के लिए सूचित किया गया था।

टिप्पणी: गहरा लाल रंग दीर्घवर्धि में देश के सबसे कम सीआरएआर को दर्शाता है जबकि गहरा हरा रंग दीर्घवर्धि में देश के सबसे ज्यादा सीआरएआर का परिचायक है।

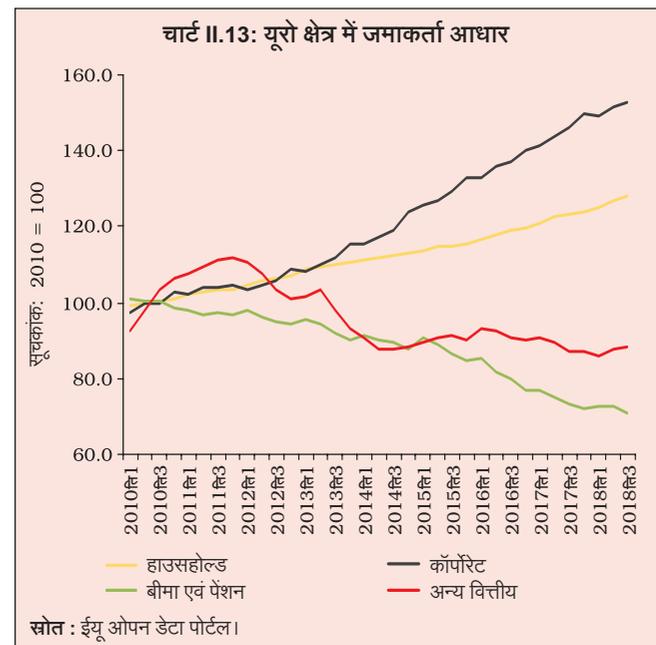
स्रोत: यूरोपीय बैंकिंग प्राधिकरण।

हाउसहोल्ड्स एवं कॉर्पोरेट्स की अधिक स्थिर जमाराशियों का हाथ है, भले ही ऐतिहासिक रूप से जमा दरें कम हों। इन गतिविधियों को 2018 में बढ़ावा मिला (चार्ट II.13)।

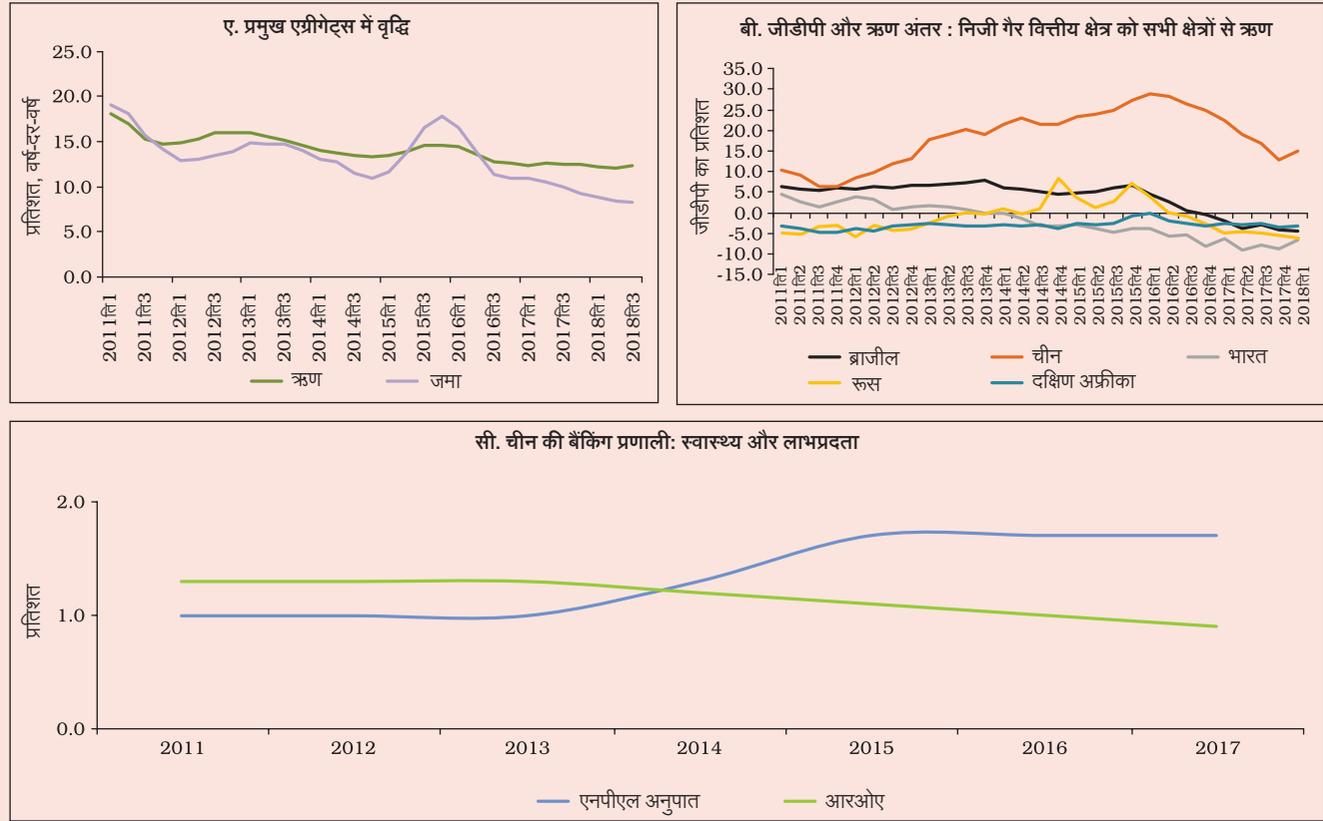
4.4 चीन

II.24 चीन डीलीवरेजिंग को अपनाते हुए अपनी संवृद्धि कार्यनीति का पुनर्विन्यास करने की दिशा में लंबी छलांगें लगा रहा है। इसके परिणामस्वरूप, वर्ष 2017 के दौरान ऋण संवृद्धि मंद, किंतु मजबूत बनी रही। वर्ष 2018 में ऋणदाताओं के लिए आरक्षित निधि अपेक्षाओं में बार-बार की गई कटौती ने नए ऋणों की वृद्धि में सहायता की। तथापि, यूएस के साथ जारी व्यापार युद्ध तथा नीति-निर्माताओं द्वारा आभासी वित्तपोषण पर की गयी कड़ी कार्रवाई के कारण वर्ष 2018 में अब तक समग्र रूप से क्रेडिट की स्थिति कठोर रही है (चार्ट II.14ए)। थोक निधीयन पर निर्भरता के लिए सीमाएं निर्धारित करना, संपत्ति प्रबंधन उत्पादों का विकास, तथा अनर्जक ऋणों (एनपीएल) की बेहतर पहचान जैसे नए उपायों ने वित्तीय

प्रणाली की मजबूती को बढ़ाया और आंतरिक जुड़ाव को कम किया। इन गतिशील उपायों ने क्रेडिट / जीडीपी अनुपातों को वापस अधिक सामान्य स्तरों पर लौटाने में सहायता की है



चार्ट II.14: चीन की बैंकिंग प्रणाली



स्रोत : सीईआईसी, बीआईएस और आईएमएफ।

(चार्ट II.14बी)। हालांकि वर्ष 2017 के दौरान चीन के बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में सुधार आया, किंतु निवल ब्याज मार्जिन कम रहने के कारण उनकी लाभप्रदता पर दबाव बना रहा (चार्ट II.14सी)।

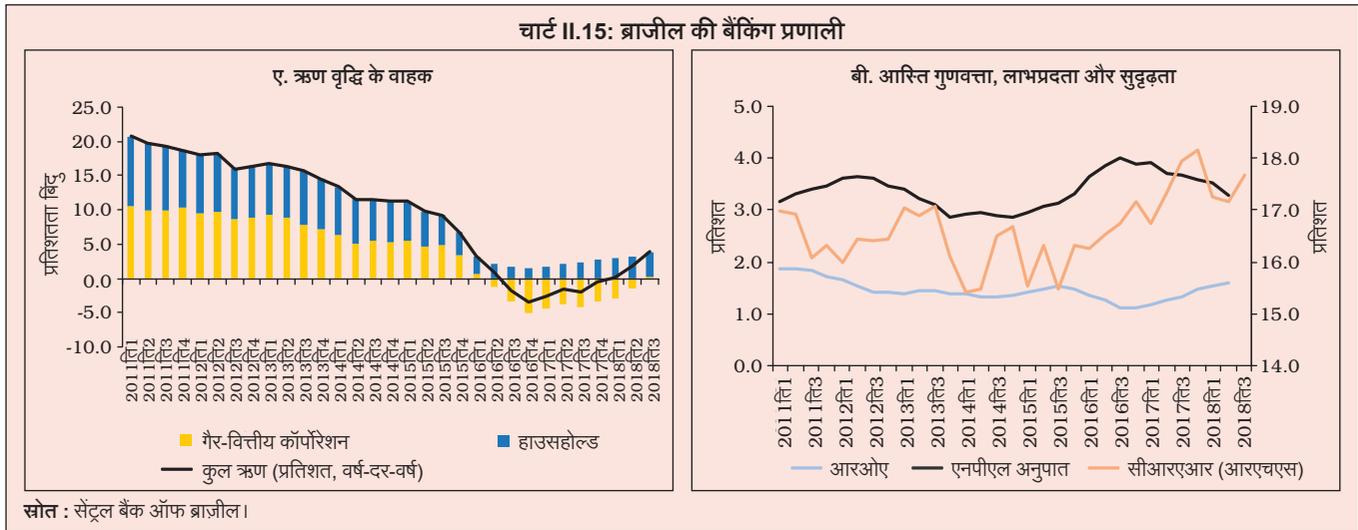
4.5 ब्राज़ील

II.25 ब्राज़ील में आर्थिक बहाली और समष्टि अर्थव्यवस्था के आधारभूत तत्वों में मजबूती आने के साथ-साथ 2017 में लाभप्रदता और ऋण संकेतकों के बेहतर स्थिति में रहने से जोखिम अवशोषण क्षमता में वृद्धि देखी गई। ऋण संवृद्धि में सुधार आना शुरू हुआ जिसमें हाउसहोल्ड क्षेत्र सबसे आगे रहा, और वर्ष 2018 की हाल की तिमाहियों में यह धनात्मक हो गयी, यद्यपि ऐतिहासिक मानकों की तुलना में यह अब भी कमजोर है (चार्ट II.15ए)। बैंकों के कार्य-निष्पादन में सुधार आया, जो लाभप्रदता में वृद्धि तथा एनपीएल अनुपात में कमी

में प्रतिबिंबित हुआ (चार्ट II.15बी)। मंदी के दौरान काफी नुकसान झेलने के बावजूद वर्ष 2018 की तीसरी तिमाही में बैंकों में पूंजी, चलनिधि और लाभप्रदता की स्थिति अच्छी बनी रही है।

4.6 रूस

II.26 कच्चे तेल की बढ़ती हुई अंतरराष्ट्रीय कीमतों के कारण व्यक्तिगत और कॉर्पोरेट ऋणों की बढ़ती हुई मांग के बल पर रूसी अर्थव्यवस्था मंदी से उबर रही है (चार्ट II.16)। तथापि, वर्ष 2017 में कुछ बैंकों के डूब जाने की घटनाओं ने तुलन-पत्र को स्वच्छ बनाने और संबंधित पार्टियों को उधार देने पर रोक लगाने के महत्व को रेखांकित किया। बैंकिंग प्रणाली को सुदृढ़ बनाने के लिए किए गए सम्मिलित नीतिगत प्रयासों के भाग के रूप में “ज़ोम्बी” बैंकों का परिसमापन अथवा उनके कारोबार को बहाल किया गया।



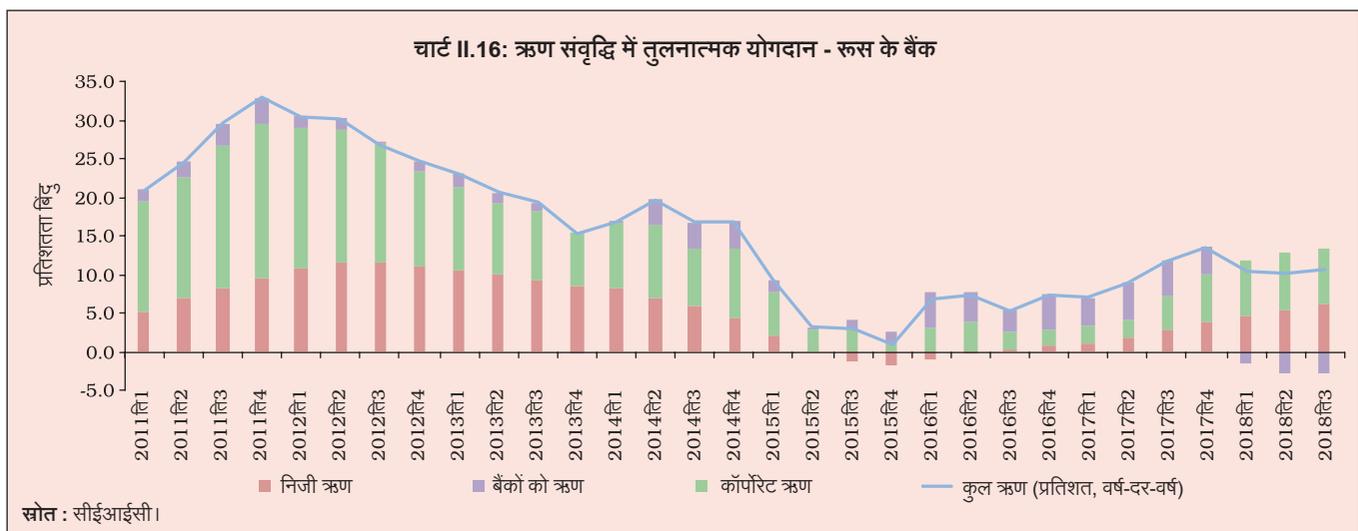
5. विश्व के सबसे बड़े बैंक⁶

II.27 विश्व के शीर्ष 100 बैंकों को नमूने के रूप में लेते हुए उनकी रैंकिंग टिअर 1 पूंजी के आधार पर करने पर ईएमई बैंकों की उपस्थिति में इजाफा पाया गया और यह देखा गया कि 2016 की तुलना में उनकी आस्तियाँ 2017 में अधिक थीं। शीर्ष 100 बैंकों में यूएस के बैंकों की हिस्सेदारी घटी जबकि चीन, भारत, दक्षिण कोरिया और यूई की हिस्सेदारी बढ़ी (चार्ट II.17)।

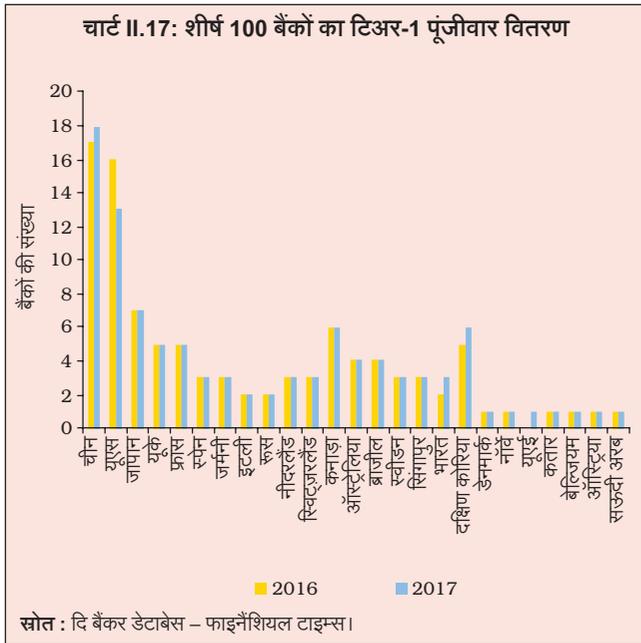
II.28 सबसे बड़े 100 बैंकों का आस्तियों पर प्रतिलाभ, जिससे लाभप्रदता मापी जाती है, पिछले वर्ष की तुलना में

वर्ष 2017 में अधिक रहा। खास तौर पर, शीर्ष 100 बैंकों में धनात्मक आरओए वाले बैंकों की संख्या में 2017 में वृद्धि हुई, और केवल एक बैंक का आरओए ऋणात्मक रहा जबकि वर्ष 2016 में पाँच बैंकों के प्रतिलाभ ऋणात्मक दर्ज किए गए थे। हालांकि, 1.0 प्रतिशत से अधिक आरओए वाले बैंकों की संख्या पहले जितनी ही रही (चार्ट II.18ए और बी)। उच्च एनपीएल अनुपात वाले बैंकों की संख्या घटने के कारण लाभप्रदता बढ़ी है, क्योंकि 5 प्रतिशत से अधिक एनपीएल अनुपात वाले बैंकों की संख्या वर्ष 2016 की तुलना में वर्ष 2017 में कम रही।

II.29 आस्ति गुणवत्ता में सुधार के साथ-साथ बैंकों में पूंजी की स्थितियाँ भी अपेक्षाकृत सुदृढ़ बनी रहीं जिससे पिछले वर्ष



⁶ आंकड़े फाइनेंशियल टाइम्स के बैंकर डेटाबेस से लिए गए हैं।

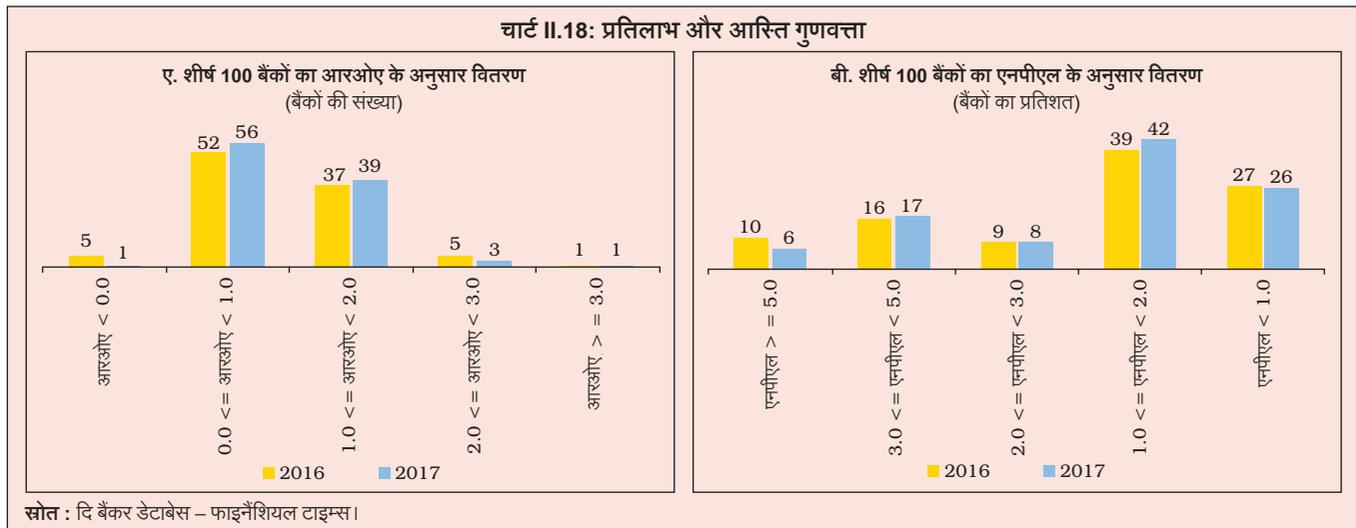


की तुलना में वित्तीय लीवरेज में भी उसके साथ-साथ कमी लाना संभव हुआ। वर्ष 2016 के 53 बैंकों की तुलना में वर्ष 2017 में 60 बैंकों का लीवरेज अनुपात कम से कम 6 प्रतिशत रहा (चार्ट II.19ए)। इसके अतिरिक्त, सभी शीर्ष 100 बैंकों ने वर्ष 2016 और 2017 में लीवरेज अनुपात 3 प्रतिशत से अधिक, अर्थात् बासेल III में निर्धारित विनियामकीय न्यूनतम सीमा से ऊपर बनाए रखा।

II.30 लीवरेज अनुपात में सुधार के अतिरिक्त, वर्ष 2017 के दौरान जोखिम समायोजित आस्तियों की तुलना में पूंजी स्थिति सुदृढ़ बनी रही। उदाहरणार्थ, 2017 में 12 प्रतिशत, अर्थात् बासेल III में निर्धारित स्तर के डेढ़ गुने से अधिक पूंजी-जोखिम भारित आस्ति अनुपात (सीआरएआर)⁷ रखने वाले बैंकों की संख्या बढ़ी (चार्ट II.19बी)। इसके बावजूद, बैंकों के पास अधिक पूंजी का निहितार्थ अधिक लाभप्रदता नहीं था, क्योंकि आरओए कमजोर बना रहा (चार्ट II.20ए)। इतना ही नहीं, वर्ष के दौरान ऋणात्मक आरओए रिपोर्ट करने वाले एकमात्र बैंक का एनपीएल अनुपात अधिकतम था, जो आस्ति गुणवत्ता खराब होने का प्रतिकूल प्रभाव लाभप्रदता पर पड़ने का द्योतक है (चार्ट II.20 बी)।

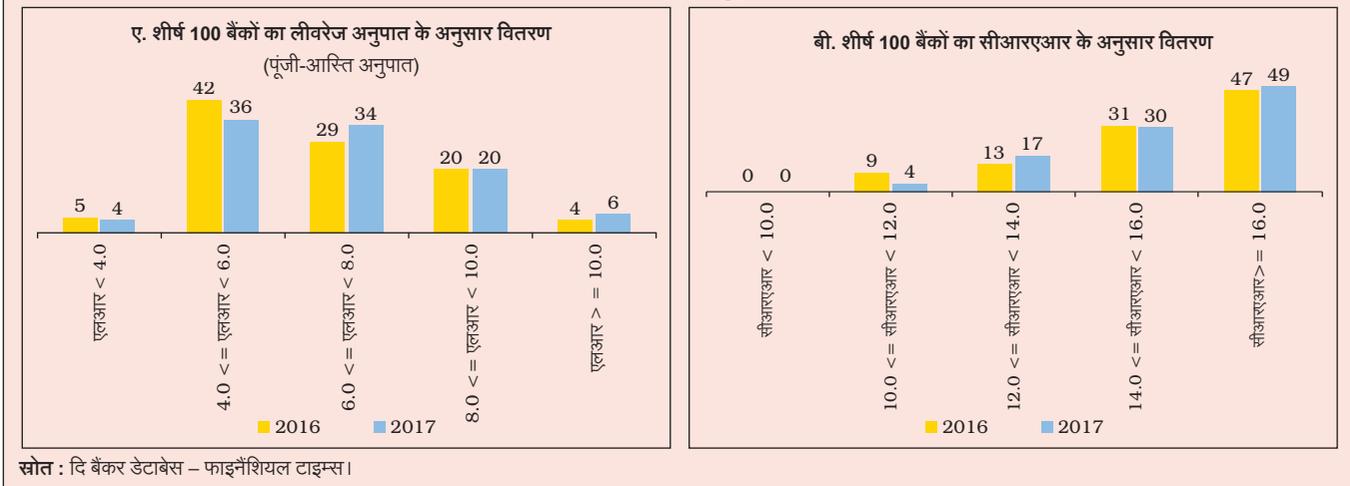
6. वैश्विक बैंकिंग नीतिगत गतिविधियां

II.31 वर्ष 2017 और 2018 में अब तक, वैश्विक बैंकिंग जगत में नीतिगत गतिविधियों को आकार देने में दो विशिष्ट चुनौतियों का हाथ रहा, पहला, संरचनात्मक सुधार करते हुए तथा अतिसंवेदनशीलताओं को दूर करते हुए बैंकिंग क्षेत्र को सुदृढ़ करने की जरूरत एवं दूसरा, उभरते आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के संबंध में सतत रूप से हो रहे सुधार कार्य को दुरुस्त करना।



⁷ सीआरएआर को मापने के लिए टिअर 1 पूंजी और टिअर 2 पूंजी, दोनों कटौतियों के बाद, के योग को कुल जोखिम भारित आस्तियों से विभाजित किया जाता है और इसे प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है।

चार्ट II.19: बैंक सुदृढ़ता



II.32 पहला लक्ष्य पूरा करने के लिए, वैश्विक वित्तीय संकट के एक दशक के बाद वित्तीय प्रणाली को अधिक सुरक्षित और सुदृढ़ बनाने की दिशा में किए गए सुधार कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं (बॉक्स II.1)। इस संदर्भ में, जोखिमों और कमजोर पक्षों की पहचान और उनका मूल्यांकन करने, सुधारात्मक नीतियों का खाका तैयार करने को आकार देने तथा वित्तीय स्थिरता के लिए उत्तरदायी प्राधिकारियों के बीच समन्वय बढ़ाने के अधिदेश के साथ वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) की स्थापना अपने आप में एक प्रमुख संस्थागत सुधार है।

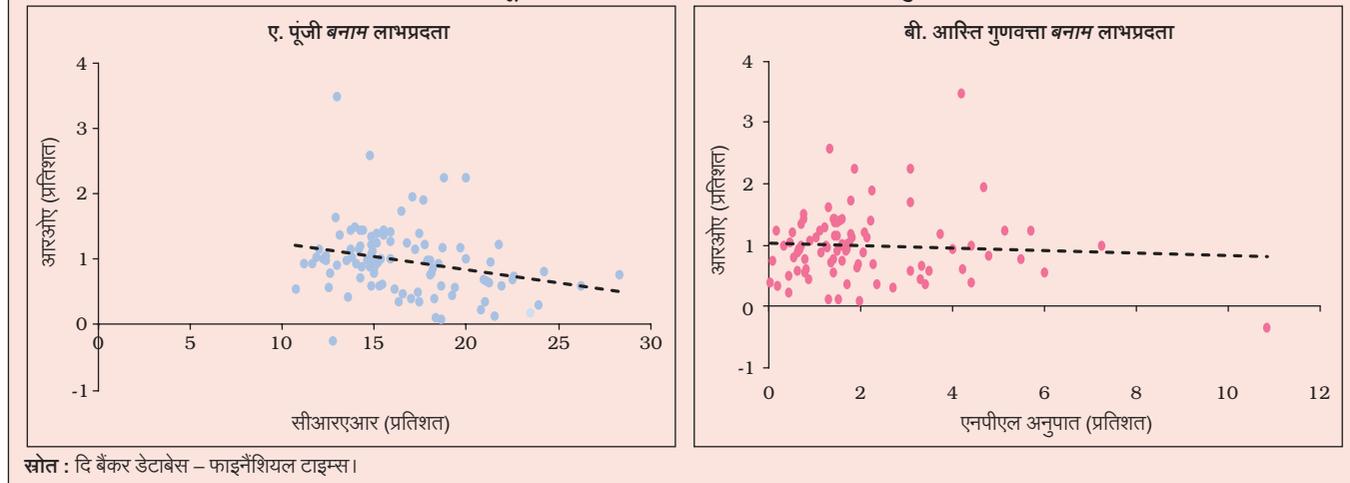
6.1 अन्य वैश्विक विनियामकीय सुधार

II.33 बासेल III की प्रक्रियाओं और इनके साथ-साथ मानक निर्धारण की दिशा में की जाने वाली पहलों के अंतर्गत चार मुख्य क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है : (i) वित्तीय संस्थानों को अधिक सुदृढ़ बनाना; (ii) टू बिग टु फेल (टीबीटीएफ) को समाप्त करना; (iii) व्युत्पन्नी बाजार को अधिक सुरक्षित बनाना; तथा (iv) गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता को सुदृढ़ बाजार-आधारित वित्तीय मध्यस्थता में परिवर्तित करना।

6.2 सुदृढ़ वित्तीय संस्थाओं का गठन

II.34 बासेल III अधिक सुदृढ़ वित्तीय संस्थाएं बनाने के अंतरराष्ट्रीय प्रयासों में केंद्रीय भूमिका निभा रहा है। विश्व भर

चार्ट II.20: पूंजी पर्याप्तता बनाम लाभप्रदता बनाम आस्ति गुणवत्ता



बॉक्स II.1: दस सर्वोत्तम वैश्विक बैंकिंग प्रथाएं

वित्तीय सेवाओं में प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल के क्षेत्र में हो रहे विकास का लाभ उठाते हुए और गैर-बैंकों, पूंजी बाजारों, इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्मों द्वारा मध्यस्थता समाप्त करने के लिए जारी प्रतिस्पर्धा से प्रेरित होकर एवं परिवर्तनशील जनसांख्यिकी और ग्राहक प्रोफाइल के कारण वैश्विक वित्तीय संकट (जीएफसी) के बाद, वित्तीय क्षेत्र में किए गए सुधार बैंकिंग प्रथाओं को नये सिरे से आकार दे रहे हैं। इस पृष्ठभूमि में यह देखना उपयोगी होगा कि इस अवधि के दौरान विकसित प्रमुख मानक निर्धारक बैंचमार्क कौन से हैं और उन क्षेत्राधिकारों में जिनके लिए आधिकारिक सूचना उपलब्ध है, उन्होंने किस प्रकार बैंकिंग प्रथाओं को प्रभावित किया है।

1. पूंजी बफर

बासेल III मानक (2009) में न्यूनतम विनियामक पूंजी अपेक्षाओं, पूंजी संरक्षण बफर, प्रतिक्रिय पूंजी बफर तथा लीवरेज अनुपात का निर्धारण किया गया है (सारणी 1)।

बैंक-ऋणों पर इन पूंजी अपेक्षाओं के प्रतिकूल प्रभाव बनाम बेल-आउट, जो कि करदाताओं के पैसों से किया जाता है, को न्यूनतम किए जाने में इन बफरों के महत्व पर जोरदार बहस होती रही है। इस बीच, बैंक अपनी पूंजी स्थितियों को इन मानदंडों के अनुसार संरेखित कर रहे हैं। भारत सहित अनेक देशों में राष्ट्रीय विनियामकों ने सीआरएआर को बासेल की न्यूनतम अपेक्षा से कुछ अधिक स्तर पर रखा है (सारणी 2)। यूएस में फेडरल जमा बीमा निगम (एफडीआईसी) बीमाकृत संस्थाओं ने 2018 की दूसरी तिमाही के अंत में

सारणी 1: बासेल III दिशानिर्देश

ए. पूंजी आवश्यकता	
विनियामक पूंजी	जोखिम भारित आस्तियों के प्रतिशत के अनुसार
I. न्यूनतम सामान्य इक्विटी टिअर 1 (सीईटी1) अनुपात	4.5
II. पूंजी संरक्षण बफर (सीसीबी)	2.5
III. न्यूनतम सामान्य इक्विटी टिअर 1 अनुपात जोड़ पूंजी संरक्षण बफर (I + II)	7.0
IV. अतिरिक्त टिअर 1 पूंजी	1.5
V. न्यूनतम टिअर 1 पूंजी अनुपात (I + IV)	6.0
VI. टिअर 2 पूंजी	2.0
VII. न्यूनतम कुल पूंजी अनुपात (एमटीसी) (V+ VI)	8.0
VIII. एमटीसी जोड़ सीसीबी (II+VII)	10.5

बी. चलनिधि अनुपात

चलनिधि कवरेज अनुपात : 1 जनवरी 2019 तक न्यूनतम 100 प्रतिशत
निवल स्थिर निधीयन अनुपात : निरंतर आधार पर कम से कम 100 प्रतिशत

सारणी 2: उच्च पूंजी पर्याप्तता मानदंडों के साथ क्षेत्राधिकार

क्षेत्राधिकार	न्यूनतम सामान्य इक्विटी अनुपात	न्यूनतम टिअर 1 पूंजी अनुपात	न्यूनतम कुल पूंजी अनुपात
बासेल III के अंतर्गत आवश्यकता	4.5	6.0	8.0
ब्राजील			11.0. धीरे-धीरे 2019 तक बासेल III के अनुरूप होना
भारत	5.5	7.0	9.0
चीन	5.0	6.0	8.0
दक्षिण अफ्रीका	5.0	6.75	9.0
मेक्सिको (न्यूनतम आवश्यकताओं में सीसीबी सहित)	7.0	8.5	10.5
स्विट्जरलैंड	4.5 to 10.0	6.0 to 13.0	8.0 to 19.0
तुर्की	4.5	6.0	12.0
सिंगापुर	6.5	8.0	10.0

स्रोत : अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक (बीआईएस) की विनियामकीय निरंतरता आकलन कार्यक्रम (आरसीएपी) रिपोर्ट।

13.1 प्रतिशत का (सीईटी1) पूंजी अनुपात बनाए रखा जबकि यूरो क्षेत्र के लिए 2018 की दूसरी तिमाही के अंत में यह अनुपात 14 प्रतिशत से ऊपर था। इसकी तुलना में भारत में बैंकों का सीईटी1 जून 2018 के अंत में 10.65 प्रतिशत रहा।

2. चलनिधि बफर

वर्ष 2010 के अंत तक बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति (बीसीबीएस) ने दो चलनिधि मानकों की सिफारिश की – चलनिधि कवरेज अनुपात (एलसीआर)⁸ तथा निवल स्थिर निधीयन अनुपात (एनएसएफआर)⁹ (सारणी 1)। एलसीआर का उद्देश्य अल्पकालिक, अस्थिर निधीयन स्रोतों, जो रोल-ओवर जोखिमों के अधीन हों, पर बैंकों की निर्भरता को कम करना है, जबकि एनएसएफआर का उद्देश्य मध्यम से दीर्घ अवधि के लिए चलनिधि की मजबूत स्थिति बनाए रखना है।

हालांकि भारत में एलसीआर को 2015-19 के दौरान चरणबद्ध रूप से लागू किया जा रहा है, रिजर्व बैंक ने अधिसूचित किया है कि एनएसएफआर दिशानिर्देश को 01 अप्रैल 2020 से लागू कर दिया जाएगा। भारतीय बैंकों ने जून 2018 के अंत तक लगभग 139 प्रतिशत एलसीआर बनाए रखा। यूरो क्षेत्र के बैंक द्वारा 2018 की दूसरी तिमाही में 141 प्रतिशत से अधिक एलसीआर बनाए रखा गया। (जारी)

⁸ एलसीआर, चलनिधि दबावपूर्ण परिदृश्य में अगले 30 कैलेंडर दिनों में कुल निवल (अंतर्वाहों के) प्रत्याशित नकदी बहिर्वाहों की तुलना में उच्च गुणवत्ता वाली चलनिधि आस्तियों (एचक्यूएलए) का अनुपात है। 100 प्रतिशत मूल्य एचक्यूएलए के स्टॉक से संबंधित है जो कुल निवल नकदी बहिर्वाहों के बराबर है।

⁹ निवल स्थिर निधीयन अनुपात (एनएसएफआर) को अपेक्षित स्थिर निधि (आरएसएफ) की राशि की तुलना में उपलब्ध स्थिर निधीयन (एएसएफ) की राशि के रूप में परिभाषित किया गया है। एएसएफ को पूंजी और देयताओं के उस भाग के रूप में परिभाषित किया गया है जिसके एक वर्ष के लिए विश्वसनीय होने की आशा है। 100 प्रतिशत मूल्य एएसएफ से संबंधित है जो आरएसएफ के बराबर है।

3. आस्ति गुणवत्ता

एनपीए की पहचान, वर्गीकरण और मापन को अभिशासित करने वाली विवेकपूर्ण फ्रेमवर्कों में काफी भिन्नता है। समस्याग्रस्त आस्तियों के विवेकपूर्ण उपचार (पीटीए) पर हाल के दिशानिर्देश (बीसीबीएस, 2017) आस्ति श्रेणीकरण के लिए मौजूदा लेखांकन और विनियामक फ्रेमवर्क के पूरक हैं।

आयरलैंड के मामले में, वर्ष 2008 के संकट के बाद, एनपीएलमें वृद्धि को रोकने के लिए विनियामकीय सख्ती अपरिहार्य हो गई। रोमानिया में बहुआयामी विधि को अपनाया गया है : बैंकों को असंपार्श्विकृत और पूर्णतः प्रावधानीकृत अस्थायी एनपीएल से छुटकारा पाने के लिए प्रोत्साहित करना; संपार्श्विकों के बाजार मूल्य को मान्यता देना; और अधिक कठोर ऑन-साइट निरीक्षण करना। अनेक एशियाई देशों, जैसे थाईलैंड, कोरिया और जापान में एनपीएल कम करने के लिए सरकार द्वारा अधिकार-प्राप्त आस्ति प्रबंधन कंपनियाँ (एएमसी) बनायीं गयीं। भारतीय संदर्भ में, एनपीए की समस्या से निपटने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक ने एनपीए की पहचान, प्रावधानीकरण और समाधान की बहुआयामी कार्यनीति अपनायी। दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (आईबीसी) के अधिनियमन के कारण एनपीए समाधान प्रक्रिया को काफी मजबूती मिली है।

4. लाभप्रदता

बैंकों के लिए अप्रत्याशित आकस्मिकताओं के लिए समुचित आरक्षित निधि बनाए रखते हुए लाभप्रदता बनाए रखना आवश्यक है, ताकि स्वामी के रूप में इक्विटी धारकों को प्रतिफल दिया जा सके। देश का यह अनुभव है कि लाभप्रदता संकेतकों, जैसे एनआईएम, आरओए तथा आरओई के विश्लेषण के लिए सामान्य प्रवृत्ति एक बहुआयामी विधि को अपनाने की रही है। उदाहरणार्थ, उच्च निवल ब्याज मार्जिन (एनआईएम), जो बैंकों के आस्ति-देयता प्रबंधन को मापने का पैमाना है, यह दर्शा सकता है कि बैंक लाभप्रद स्थिति में है। किंतु जब इसे निम्न ऋण-आस्ति अनुपात के साथ जोड़कर देखा जाएगा, तब यह सुस्त बैंकिंग अथवा चलनिधि जोखिम के प्रति अत्यधिक लीवरेज वाला एक्सपोजर दर्शा सकता है। लाभप्रदता पर चर्चा के लिए कृपया इस अध्याय का भाग 3.1 देखें।

5. जोखिम प्रबंधन

जोखिम-पहचान दक्षता अर्थव्यवस्था में संध लगाने वाली स्थितियां उत्पन्न होने से बचाव की दिशा में प्रथम प्रतिरक्षा पंक्ति के रूप में कार्य करती है। विनियमन को मजबूत करने के लिए, बासेल III ने व्यापारिक बही तथा बैंकिंग बही आदि के बीच दोबारा सीमा निर्धारण के साथ-साथ पिलर 1 के अंतर्गत ऋण जोखिम, बाजार जोखिम और परिचालनात्मक जोखिम के प्रति मानकीकृत दृष्टिकोण में बदलाव किया है। बासेल III सुधारों के पिलर 2 के अंतर्गत बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम के प्रबंधन पर दिशानिर्देश वर्ष 2016 में प्रकाशित किए गए हैं।

बीसीबीएस के अधिकार-क्षेत्र बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम के लिए मानकों के कार्यान्वयन पर कार्य कर रहे हैं, जिसे लागू करने की अंतिम सीमा वर्ष 2018 है। अर्जेंटीना, जापान तथा इंडोनेशिया जैसे देशों ने सितंबर 2018

में अंतिम नियम प्रकाशित कर दिए हैं। जहाँ तक भारत की बात है, विनियमों का प्रारूप प्रकाशित कर दिया गया है। जोखिम के प्रति संशोधित विधियों के कार्यान्वयन के लिए बीसीबीएस डेडलाइन 2022 में निर्धारित की गई है।

6. फिनटेक का उपयोग करना

वित्तीय सेवाओं में प्रौद्योगिकी समर्थित नवोन्मेष, जिसे सामान्यतः फिनटेक के नाम से जाना जाता है, ने अपनी कम लागत और बढ़ती हुई वित्तीय पहुंच के साथ पारंपरिक ईट-गारे के ढांचे वाले बैंकिंग मॉडल को चुनौती दी है। मोबाइल बैंकिंग, पी2पी उधार देना, एप्रीगेटर्स और इस प्रकार के अन्य उत्पादों ने वित्तीय सेवाएं प्रदान करने के तरीकों में बदलाव कर दिया है, किंतु इसमें निहित जोखिमों के प्रति सचेत रहना महत्वपूर्ण है। बीआईएस ने फरवरी 2018 में बैंकों और बैंक पर्यवेक्षकों के लिए फिनटेक के संदर्भ में उचित प्रथाएं जारी कीं।

जिन क्षेत्राधिकारों में फिनटेक के कारण वित्तीय परिदृश्य में पहले ही काफी बदलाव आ चुका है, उनमें यूएस, चीन, यूके, सिंगापुर, फ्रांस और भारत शामिल हैं। भारत में ज्यादातर बड़े बैंकों के आधे से ज्यादा लेनदेनों में किसी न किसी रूप में फिनटेक जुड़ा हुआ है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) का प्रयोग अभी अपेक्षाकृत कम है, किंतु ये बैंकिंग सेवाओं में सुधार का अगला दौर शुरू कर सकते हैं।

7. साइबर सुरक्षा में निवेश

पूरे विश्व में हाल में हुए साइबर आक्रमणों ने साइबर जोखिमों की गंभीरता को रेखांकित किया है। अध्ययनों ने यह दर्शाया है कि साइबर जोखिम का वित्तीय स्थिरता पर संभाव्य निहितार्थ हो सकता है। वित्तीय बाजार इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए साइबर आघात-सहनीयता पर मार्गदर्शन (भुगतान और बाजार इन्फ्रास्ट्रक्चर पर समिति, 2016) में साइबर आघात-सहनीयता क्षमताएं बढ़ाने की तैयारी पूरी करने के लिए सामान्य निर्देश उपलब्ध कराए गए हैं। विनियामकों ने विनियमित इकाइयों में साइबर जोखिमों से निपटने की महत्ता को समझा है और साइबर-सुरक्षा फ्रेमवर्क को बेहतर करने की पध्दतियों को अपनाया है।

यूरोपीय संघ जैसे क्षेत्राधिकारों ने एक जोखिम रिपोर्टिंग ढांचा बनाने के अलावा सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) जोखिम (2017) के मूल्यांकन के लिए दिशानिर्देश प्रकाशित किया है। यूके ने सीबीईएसटी (2015) को विकसित किया है जो वैयक्तिक संस्थानों की साइबर आघात सहनीयता के परीक्षण के लिए एक पर्यवेक्षी साधन है। द यूएस फेडरल फाइनेंशियल इन्स्टिट्यूशन्स एक्जामिनेशन काउंसिल (एफएफईआईसी) ने साइबर सुरक्षा जोखिमों का आकलन करने और संस्थाओं को इनके लिए तैयार करने के लिए वर्ष 2015 में साइबर सुरक्षा मूल्यांकन साधन विकसित किए। ईसीबी की साइबर वारदात रिपोर्टिंग प्रणाली वर्ष 2017 से कार्य कर रही है। रिज़र्व बैंक ने जून 2016 में बैंकों के लिए साइबर सुरक्षा फ्रेमवर्क भी तैयार किया। इस फ्रेमवर्क के संदर्भ में बैंक असामान्य साइबर संबंधी घटनाओं को 2- 6 घंटों के भीतर रिपोर्ट करते हैं और घटनाओं की गंभीरता के आधार पर उनकी जांच हेतु एक साइबर संकट प्रबंधन समूह गठित किया गया है।

(जारी)

8. वित्तीय समावेशन, वित्तीय साक्षरता तथा उपभोक्ता संरक्षण

वित्तीय समावेशन के संबंध में बैंकिंग प्रथाएं अलग-अलग देशों में अलग-अलग हैं। केन्या में मोबाइल बैंकिंग, सेवाओं के समूहीकरण और वित्तीय सेवाओं के डिजिटलीकरण से लाभ मिला है। ब्राज़ील ने कम बैंकिंग सेवा-प्राप्त लोगों को लक्षित करते हुए प्रतिनिधि बैंकिंग मॉडल लागू किया। भारत, इंडोनेशिया और रूस ने निम्न-आय वाले ग्राहकों के लिए नो-फ्रिल खाते शुरू किए। बांग्लादेश में वित्तीय समावेशन में सूक्ष्म वित्त संस्थाओं ने सहायता की। सही तरीके से क्रियान्वित की गई वित्तीय समावेशन कार्यनीति ने बैंक स्थिरता में सुधार दर्शाया है (अहमद एंड मल्लिक, 2017)। साथ ही, सर्वोत्तम प्रथा के रूप में वित्तीय साक्षरता और ग्राहक संरक्षण को समावेशन का पूरक होना आवश्यक है।

भारत अनेक महत्वपूर्ण मापदंडों में ब्रिक्स का नेतृत्व करता है। इसने वर्ष 2017 में अपनी 80 प्रतिशत वयस्क जनसंख्या की बैंक खातों तक पहुंच के साथ चीन की बराबरी कर ली है। पिछले तीन वर्षों में बैंकिंग तक पहुंच में स्त्री-पुरुष भेद काफी कम हो गया है। प्रधानमंत्री जन-धन योजना (पीएमजेडीवाई) की शुरुआत वित्तीय समावेशन में बड़े परिवर्तन की वाहक बनी है (कृपया ब्योरे के लिए अध्याय IV का भाग 11 देखें)।

9. कॉर्पोरेट गवर्नेंस को मजबूत करना

कॉर्पोरेट गवर्नेंस को मजबूत बनाने के लक्ष्य के साथ सर्वोत्तम प्रथाओं पर बीआईएस, आईएमएफ, ओईसीडी तथा वर्ल्ड बैंक जैसी बहुराष्ट्रीय संस्थाओं और राष्ट्रीय प्राधिकारियों सहित विभिन्न स्थलों पर बहस चल रही है। इसका मुख्य सिद्धान्त यह है कि अंतिम जिम्मेदारी बैंकों के बोर्ड की होनी चाहिए, जो वैयक्तिक और सामूहिक रूप से अर्हता प्राप्त हों। बैंकों का अभिशासन उसके शेयरधारकों, जमाकर्ताओं, अन्य संबंधित हितधारकों, तथा बाज़ार सहभागियों के लिए पर्याप्त पारदर्शी होना चाहिए।

विभिन्न देशों के बीच विधिक और विनियामक फ्रेमवर्कों में काफी अंतर है। ईयू ने वर्ष 2013 में सीआरडी IV निदेश जारी किए, जिसमें सदस्य देशों से अपेक्षा की गई है कि प्रबंधन निकायों द्वारा ज्ञान, अर्हताओं और कुशलता पर उचित ध्यान देते हुए प्रभावी निगरानी सुनिश्चित की जाए। न्यूज़ीलैंड में भी यह आवश्यक बनाया गया है कि बैंक के बोर्ड के अधिकतर सदस्य गैर-कार्यकारी होने चाहिए तथा बोर्ड के कम से कम आधे सदस्य स्वतंत्र होने चाहिए।

के बैंक उच्चतर और बेहतर गुणवत्ता वाली पूंजी तथा चलनिधि बफर का निर्माण कर रहे हैं। विशेष रूप से, लीवरेज अनुपात तथा चलनिधि गुंजाइश संबंधी मानकों को लागू करने में काफी प्रगति हुई है। प्रतिभूतीकरण और बाजार जोखिम पर संशोधित मानक तयशुदा समय-सीमाओं में विकसित किए जा रहे हैं। दूसरी ओर, कतिपय बासेल III मानकों यथा - निधियों में इक्विटी

भारत में रिज़र्व बैंक वर्ष 2001 की शुरुआत से ही बैंकों में सर्वोत्तम कॉर्पोरेट गवर्नेंस प्रथाओं को विकसित करता एवं उसे मजबूत बनाता आया है, जिनमें बैंकों के निदेशकों के लिए 'उचित और उपयुक्त' मानदंडों, सूचना एकत्र करने के लिए प्रक्रियाओं तथा समुचित सावधानी का प्रयोग करने सहित बैंक के निदेशकों द्वारा दिए गए घोषणापत्रों की छानबीन करना शामिल है। बैंकों की अपनी स्वतंत्र समितियाँ भी हैं, जैसे लेखापरीक्षा समितियाँ और जोखिम समितियाँ। सरकार द्वारा पीएसबी में गवर्नेंस सुधारने की दृष्टि से वर्ष 2016 में बैंक बोर्ड ब्यूरो की स्थापना की गई।

10. लेखांकन मानक

विश्व भर में बैंक अंतरराष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग मानक (आईएफआरएस) के अंतर्गत वैश्विक रूप से स्वीकृत और सुसंगत लेखांकन सिद्धान्तों का अनुपालन करते हैं। उठाई गयी हानि मॉडल पर आधारित आईएएस39 के स्थान पर 01 जनवरी 2018 से आईएफआरएस 9 का कार्यान्वयन शुरू हो चुका है, जिसमें एक प्रत्याशित हानि मॉडल के तहत आशावादी दृष्टिकोण व्यक्त किया गया है।

जी20 अर्थव्यवस्थाओं में से 15 में आईएफआरएस मानकों का प्रयोग किया जाना अपेक्षित है, इनमें उल्लेखनीय अपवाद हैं, जापान, जहां आईएफआरएस मानक स्वेच्छिक हैं, यूएस, जहां देशी प्रतिभूति निर्गमकर्ता राष्ट्रीय मानकों का पालन करते हैं, और चीन, भारत और इंडोनेशिया, जहां आईएफआरएस मॉडल के अनुसार राष्ट्रीय मानकों को अपनाया गया है। अधिक वैश्विक पैमाने पर, 143 क्षेत्राधिकारों ने सभी अथवा अधिकतर घरेलू सार्वजनिक रूप से जवाबदेह संस्थाओं (सूचीबद्ध कंपनियों और वित्तीय संस्थाओं) के लिए आईएफआरएस का प्रयोग करना शुरू कर दिया है। भारत में बैंकों से अपेक्षित है कि वे 01 अप्रैल 2019 से भारतीय लेखांकन मानक (इंड एस) को अपना लें, जो कि आईएफआरएस के अनुरूप हैं। गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों ने पहले ही नए लेखांकन मानकों को अपना लिया है।

संदर्भ

अहमद, एम. तथा एस.मल्लिक (2017): 'इज फाइनेंशियल इन्क्लूजन गुड फॉर बैंक स्टेबिलिटी ? इंटरनेशनल एविडेंस', *जर्नल ऑफ इकॉनॉमिक बिहेवियर एंड ऑर्गेनाइजेशन*, आईएसएसएन 0167-2681.

निवेश के लिए पूंजी अपेक्षाएं; प्रतिपक्षकार ऋण जोखिम के लिए मानकीकृत दृष्टिकोण; केंद्रीय प्रतिपक्षकारों के प्रति एक्सपोजर हेतु पूंजी अपेक्षाएं ; केंद्रीकृत रूप से समाशोधित न की जाने वाली व्युत्पन्नियों के लिए मार्जिन अपेक्षाएं; तथा संशोधित पिलर III फ्रेमवर्क - के कार्यान्वयन में विलंब के कारण बासेल III को पूरी तरह लागू करने में बाधाएं बनी हुई हैं।

6.3 टू बिग टू फेल

11.35 एफएसबी के अधिकतर सदस्यों ने प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण बैंकों के लिए हानि अवशोषण फ्रेमवर्क को अपना लिया है। वर्ष 2019 की अपेक्षाओं को पूरा करने के क्रम में अब लगभग प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण सभी वैश्विक बैंकों (जी-एसआईबी) के लिए कुल हानि अवशोषण क्षमता (टीएलएसी) निर्गम कार्यनीतियां बना ली गयी हैं। तथापि, टीएलएसी को घरेलू विनियमों में पूर्णतः परिवर्तित करने का कार्य अभी शेष है जिसके अंतर्गत महत्वपूर्ण जी-एसआईबी अनुषंगियों के मेजबान प्राधिकारियों के लिए टीएलएसी धारिताओं तथा आंतरिक टीएलएसी अपेक्षाओं पर बीसीबीएस के मानक तय किए जाने हैं।

11.36 लगभग सभी जी-एसआईबी के लिए पर्यवेक्षी कॉलेजों की स्थापना की गई है। व्यापक रूप से एफएसबी द्वारा बनायी गयी प्रभावी समाधान प्रणालियों की प्रमुख विशेषताओं की ही तर्ज पर वित्तीय संस्थाओं के लिए तैयार की गयी विस्तृत शक्तियों वाली समाधान प्रणालियां अधिकांश जी-एसआईबी द्वारा अपने क्षेत्राधिकार में लागू की जा चुकी हैं। तथापि, बेल-इन तथा समय-पूर्व समाप्ति अधिकार संबंधी फ्रेमवर्क अभी भी कमजोर हैं। अधिकतर जी-एसआईबी ने जोखिम डेटा संग्रह और जोखिम रिपोर्टिंग पर बीसीबीएस सिद्धान्तों का पूर्ण कार्यान्वयन नहीं किया है, हालांकि सूचना साझा करने और समन्वित जोखिम मूल्यांकन करने में आने वाली चुनौतियों से निपटने का कार्य जारी है।

6.4 व्युत्पन्नी बाजार को अधिक सुरक्षित बनाना

11.37 ओवर-द-काउंटर (ओटीसी) व्युत्पन्नी बाजारों के लिए एफएसबी द्वारा तैयार किए गए एजेंडा में शामिल हैं- मानकीकरण, केंद्रीय समाशोधन, एक्सचेंज अथवा इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म पर ट्रेडिंग, मार्जिनिंग तथा ट्रेड रिपोजिटरी को ओटीसी व्युत्पन्नी लेनदेनों की रिपोर्टिंग करना।

11.38 कुछ क्षेत्राधिकारों में ओटीसी व्युत्पन्नी सुधारों का कार्यान्वयन जारी है, हालांकि कुछ विलंब हो रहा है, जो केवल सुधारों के बड़े पैमाने पर होने और इनमें निहित जटिलता के कारण है। ट्रेड रिपोर्टिंग और केंद्रीकृत रूप से समाशोधित न

किए जाने वाली व्युत्पन्नियों के लिए पूंजी अपेक्षाओं के क्षेत्रों में यह कार्यान्वयन सबसे अधिक प्रगति पर है। जहाँ केंद्रीय समाशोधन फ्रेमवर्क का कार्यान्वयन एफएसबी के 75 प्रतिशत सदस्यों ने कर लिया है, वहीं लगभग 50 प्रतिशत एफएसबी सदस्यों द्वारा मार्जिन अपेक्षाओं के लिए प्लेटफॉर्म ट्रेडिंग फ्रेमवर्क लागू कर दिया है।

6.5 गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता को सुदृढ़ बाजार आधारित वित्तपोषण में परिवर्तित करना

11.39 यद्यपि गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता प्रणाली से संबंधित जोखिमों और इनके प्लवन प्रभाव का आकलन करने के लिए एफएसबी ने मानक निर्धारक निकायों के साथ मिल कर एक प्रणाली-व्यापी निगरानी फ्रेमवर्क विकसित कर लिया है, तथापि इसका कार्यान्वयन अपेक्षाकृत शुरुआती चरण में है।

11.40 एफएसबी की एक समकक्ष समीक्षा का निष्कर्ष यह है कि विभिन्न क्षेत्राधिकारों को गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता जोखिमों का आकलन करने के लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया स्थापित करनी चाहिए तथा यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी गैर-बैंक वित्तीय इकाई अथवा क्रियाकलापों, जो गंभीर वित्तीय स्थिरता जोखिम पैदा कर सकते हैं, को विनियामक दायरे के भीतर लाया जाए। गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता प्रणाली की गतिविधियों का पता लगाने के लिए एफएसबी एक क्रिया-कलाप आधारित “आर्थिक कार्य” दृष्टिकोण के तहत एक प्रणाली-व्यापी वार्षिक निगरानी कार्यक्रम संचालित करता है, जिसमें प्राधिकारियों द्वारा गैर-बैंकिंग वित्तीय क्षेत्र के उन भागों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जहां गंभीर वित्तीय स्थिरता जोखिम पैदा होने की सबसे ज्यादा संभावना हो।

6.6 कदाचार संबंधी जोखिम

11.41 हाल के वर्षों में एफएसबी लंबे समय तक वित्तीय स्थिरता को बनाए रखने के लिए अनेक नये उपायों का समन्वय करता रहा है - कदाचार; प्रतिनिधि बैंकिंग और विप्रेषण; जलवायु संबंधी वित्तीय प्रकटीकरण और फिनटेक। एफएसबी (i) वित्तीय

संस्थाओं के अभिशासन और प्रतिफल ढांचों में सुधार लाने; (ii) नियत आय, पण्य वस्तुओं और मुद्रा बाजारों में आचरण के लिए वैश्विक मानकों का उन्नयन करने; तथा (iii) प्रमुख वित्तीय बेंचमार्क व्यवस्थाओं में चालबाजियों के जोखिम को कम करने पर ध्यान केंद्रित करने वाले अनेक निरोधक उपायों के द्वारा कदाचार जोखिम से निपटने के लिए एक कार्रवाई योजना का कार्यान्वयन कर रहा है।

11.42 एफएसबी द्वारा इन प्रयासों का लेखा-जोखा मई 2017 में प्रकाशित किया गया था, जिसमें पर्यवेक्षकों के लिए कदाचार जोखिम को कम करने के लिए क्षेत्र निर्धारित किए गए थे। मई 2018 में, एफएसबी ने प्रतिफल साधनों के प्रयोग पर डेटा की सुसंगत राष्ट्रीय रिपोर्टिंग के लिए सिफारिशों पर परामर्शात्मक दस्तावेज जारी किया।

6.7 प्रतिनिधि बैंकिंग और विप्रेषण

11.43 एफएसबी ने नवंबर 2015 में प्रतिनिधि बैंकिंग में आयी कमी के आकलन और उसके समाधान के लिए एक चार-सूत्री कार्य- योजना की शुरुआत की। मार्च 2016 में एफएसबी ने चार क्षेत्रों, अर्थात्, (i) इस मुद्दे से जुड़े विभिन्न पहलुओं और जटिलताओं की जांच करने; (ii) वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (एफएटीएफ) तथा बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति (बीसीबीएस) द्वारा मार्गदर्शन के साथ विनियामकीय अपेक्षाओं को स्पष्ट करने; (iii) प्रभावित प्रतिनिधि बैंकों के लिए उनके अपने क्षेत्राधिकार में घरेलू क्षमता निर्माण करने; तथा (iv) प्रतिनिधि बैंकों द्वारा समुचित सावधानी उपायों को मजबूत बनाने के लिए कार्य-योजना के कार्यान्वयन हेतु प्रयासों का समन्वय करने और बनाए रखने के लिए प्रतिनिधि बैंकिंग समन्वय समूह (सीबीसीजी) की स्थापना की। एफएसबी प्रतिनिधि बैंकिंग डेटा रिपोर्ट भी प्रकाशित करता है, जिसमें प्रतिनिधि बैंकिंग संबंधों (सीबीआर) की संख्या, विशेषतः यूएस डॉलर और यूरो के लिए, में गिरावट पर प्रकाश डाला जाता है। सीबीआर समाप्त होने में अन्य बातों के साथ-साथ उद्योग समेकन, लाभप्रदता कम होना, समग्र जोखिम सहनीयता, तथा

धन-शोधन निवारण और आतंकवाद वित्तपोषण का मुकाबला करने (एएमएल/ सीएफटी) से संबंधित विभिन्न कारणों अथवा प्रतिबंध व्यवस्थाओं का योगदान है।

6.8 जलवायु संबंधी वित्तीय प्रकटीकरण

11.44 बाजार सहभागियों के लिए जलवायु संबंधी वित्तीय जोखिमों से जुड़ी बेहतर गुणवत्ता वाली सूचना तक पहुंच आवश्यक है ताकि वे इन्हें समझ सकें और इनका प्रबंधन कर सकें। जलवायु संबंधी वित्तीय जोखिमों पर उद्योग जगत की अगुआई में गठित कार्य-बल (टीएफसीडी) (अध्यक्ष: माइकेल ब्लूमबर्ग) ने जलवायु संबंधी वित्तीय प्रकटीकरण के संबंध में सिफारिशों की हैं, जो सभी क्षेत्रों और क्षेत्राधिकारों के संगठनों पर लागू हैं। ये सिफारिशें चार विषयों से जुड़े क्षेत्रों : गवर्नेंस; कार्यनीति; जोखिम प्रबंधन मैट्रिक्स; तथा लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए की गई हैं।

6.9 वित्तीय प्रौद्योगिकी नवोन्मेषों के निहितार्थ

11.45 वित्तीय सेवाओं में प्रौद्योगिकी समर्थित नवोन्मेष या फिनटेक के तीव्र प्रसार को देखते हुए एफएसबी उससे उत्पन्न होने वाले महत्वपूर्ण वित्तीय स्थिरता निहितार्थों का विश्लेषण करता रहा है। जून 2017 में जी-20 को प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में एफएसबी ने ऐसे 10 क्षेत्रों को रेखांकित किया, जिन पर प्राधिकारियों द्वारा ध्यान दिया जाना है। इनमें से तीन को अंतरराष्ट्रीय सहयोग की प्राथमिकताओं के रूप में देखा गया: (i) अन्य पक्ष सेवा प्रदाताओं से होने वाले परिचालनगत जोखिम का प्रबंधन; (ii) साइबर जोखिम को कम करना; तथा (iii) फिनटेक क्रियाकलापों से जुड़े हुए समष्टि वित्तीय जोखिमों की निगरानी करना।

11.46 एफएसबी ने क्रिप्टो आस्तियों की तीव्र वृद्धि के कारण सामने आए वित्तीय स्थिरता जोखिमों की समीक्षा शुरू की है। इसका प्रारंभिक आकलन यह है कि क्रिप्टो आस्तियों के कारण फिलहाल वैश्विक वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम नहीं है। बाजार तेजी से विकसित हो रहे हैं, तथापि, यदि क्रिप्टो

आस्तियों का प्रयोग और अधिक बढ़ा या यह विनियमित वित्तीय प्रणाली के मूल से आंतरिक रूप से संबद्ध हो गया, तो इस प्रारंभिक आकलन में परिवर्तन हो सकता है।

6.10 क्षेत्राधिकार विशिष्ट बैंकिंग नीतिगत गतिविधियां

11.47 अमेरिका में, वैश्विक वित्तीय संकट के बाद डॉड फ्रैंक अधिनियम पारित किया गया था ताकि बढ़ते अधिकाधिक जोखिम को नियंत्रण में किया जा सके तथा विनियामकीय नियमों को सुदृढ़ बनाया जा सके। मई 2018 में, आर्थिक संवृद्धि, विनियामकीय राहत एवं उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम को कानून के दायरे में लाया गया जो डॉड फ्रैंक अधिनियम के कुछ प्रावधानों के साथ-साथ वोल्कर नियम (स्वपूंजी ट्रेडिंग एवं निवेश निधियों के साथ कुछ संबंधों पर रोक), चुकौती-के लिए-योग्य नियम के तहत योग्य बंधक मापदंड में परिवर्तन करता है और बड़े बैंकों के विनियम को बेहतर करता है। नया कानून लघु बैंकों को बासेल III की पूंजीगत आवश्यकताओं के संबंध में 'राहत' (ऑफ-रैम्प) भी पहुंचाता है एवं विनियामकीय प्रणाली में अन्य परिवर्तन करता है।

11.48 यूरो क्षेत्र में, यूरोपीय केंद्रीय बैंक (ईसीबी) ने अपनी पर्यवेक्षी प्राथमिकताओं की समीक्षा की एवं उसे कारगर बनाया। मार्च 2019 में यूनाइटेड किंगडम की यूरोपीय संघ से निकासी को ध्यान में रखते हुए ब्रेकिजट के लिए अपने-आप को तैयार करना ईसीबी बैंकिंग पर्यवेक्षण के लिए उच्च प्राथमिकता है।

पर्यवेक्षक की सोच है कि ब्रेकिजट के संबंध में बैंकों की योजनाओं के कार्यान्वयन पर ध्यानपूर्वक निगरानी रखी जाए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पर्यवेक्षी उम्मीदों का उनके द्वारा अनुपालन किया जा रहा है।

7. उपसंहार

11.49 वैश्विक स्तर पर संवृद्धि दर में हुए सुधार तथा वैश्विक संकट के बाद किए गए सुधारात्मक उपायों में आयी गहनता के कारण बैंकों को काफी संबल मिला तथा उन्हें सुदृढ़ बनाया गया जिसे पूंजी और चलनिधि बफर में सुधार और घटते एनपीएल अनुपात से देखा जा सकता है। विश्व के अनेक क्षेत्राधिकारों में ऋण-वृद्धि हो रही है। अगला लक्ष्य प्रौद्योगिकी-चालित बैंकिंग है जिसमें जोखिम हैं तो अवसर भी। क्रिप्टो करेंसी के तेजी से बढ़ते हुए उपयोग को देखते हुए समग्र वित्तीय स्थिरता के मद्देनजर उन पर लगातार निगरानी आवश्यक है। भविष्य में, कुछ देशों में भू-राजनैतिक स्थितियों से उत्पन्न जोखिमों, और साथ ही, विकसित अर्थव्यवस्थाओं में मौद्रिक प्राधिकारियों द्वारा तीव्र गति से स्थिति को सामान्य बना दिए जाने से उत्पन्न जोखिमों पर सावधानी से निगरानी आवश्यक है। जैसे-जैसे इन जोखिमों की तीव्रता बढ़ेगी, ईएमई से आने वाले पूंजी-प्रवाह का उलट जाना, वित्तीय बाजारों में अस्थिरता आ जाना तथा जोखिम संवेदनशीलता में वैश्विक उतार-चढ़ाव के कारण संस्थाओं का कमजोर हो जाना अपरिहार्य हो जाएगा।